इंदु पदावली

भाग-1 (कृष्ण भजन)

लेखक

सुरेश चौधरी 'इंदु'

शुक्तिका प्रकाशन

इंदु पदावली : भाग-1 (कृष्ण भजन)

Indu Padawali : Part-1 (Krishn Bhajan)

ISBN : 978-93-94660-27-4

प्रकाशक :

शुक्तिका प्रकाशन

स्वामित्व : ए एंड ए इंटरप्राईजेज

पी 516/4, बी.एल. साहा रोड

कोलकाता-700038

मो. : 8582965531

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

संस्करण 2025

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

मूल्य : 250/-

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550-21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

माँ वागेश्वरी कादंबरी, नमन माँ वीणा वादिनी
मात वागर्थ दे अभिधा दे, प्रज्ञा दे हंस वाहिनी
माँ विवेक दे मनीषिका दे, माँ कर दे हृदय परिष्कृत
ज्ञान ज्योत मात जला ऐसी, आचरण होवे सुसंस्कृत
आनंद उमँग का प्रसार हो, अंग अंग नव रँग रंजित
नवल ताल संग नव गीत हों, नवल पल्लव हों पल्लवित

शुभ्र ज्ञान का उत्सर्जन कर, नव चेतस चेतन कर दे
कलुष अंध हर वर संसिद्धा, नव मेधा प्रेषण कर दे
पीत वर्ण मंडित प्रेम धरा, हो प्रज्ञा प्रीत विभूषित
श्वेत वसना चित्त हर्षित कर, कर दे माँ तन मन सिंचित

वसुंधरा धी आलोक से खोलो संकुचित अर्गला
जयति जयति जयति माँ वत्सला, हंस आरूढ़ मंगला
माँ वागेश्वरी कादंबरी, नमन माँ वीणा वादिनी
मात वागर्थ दे अभिधा दे, प्रज्ञा दे हंस वाहिनी

प्राक्कथन

प्रिय पाठकगण,

पुस्तकों की शृंखला में यह मेरी 34वीं पुस्तक और आध्यात्मिक व धार्मिक पुस्तकों में यह 12वीं है। काव्य की यह 8वीं पुस्तक है।

नटखट कान्हा के बाल रूप हो, गोपियों के विरह के आधार रूप या योगेश्वर रूप, अनेकों रूप के कृष्ण 16 कलाओं सहित अवतरित हुए। उनकी कुछ खास बात मैं यहाँ बताना चाहता हूँ।

पौराणिक प्रसंगवश श्रीकृष्ण के प्रति कई भ्रामक उक्तियाँ हैं, कुछ तो श्रीकृष्ण के अस्तित्व को ही सिरे से नकार देते हैं। कृष्ण के बारे में विस्तृत विवरण विभिन्न ग्रंथों में हैं जिनमें प्रमुख-श्री भागवत महापुराण, महाभारत, विष्णु पुराण, ब्रह्मवैर्वत पुराण, नारद पुराण हैं। अन्य जगह पर नारायण के रूप में प्रतिपादित किया गया है। कृष्ण जीवन को हम तीन स्थान एवं तीन काल में बाँट सकते हैं जैसे, गोकुल-वृन्दावन, मथुरा एवं द्वारिका। उसी प्रकार बाल लीला, महाभारत की लीला, द्वारिका की लीला।

बाल लीला का विस्तृत वर्णन श्रीमद् भागवत महापुराण के दशम स्कंध के पूर्वार्ध में दिया गया है। भागवत को पंचम वेद भी कहा जाता है। दशम स्कंध को भागवत का प्राण कहा जाता है। कृष्ण जन्म से लेकर कृष्ण के गोलोक गमन तक की सम्पूर्ण कथा बताई गयी है। प्रत्येक श्लोक अध्यात्म का, जीवन दर्शन का एक अद्भुत उदाहरण है। भागवत के कुल 18000 श्लोकों में करीबन एक तिहाई इस स्कंध में ही हैं।

बाल लीला में प्रभु के अवतरण का मुख्य उद्देश्य बताया गया है, वह हम सभी जानते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अर्ध काल रात्रि को घनघोर वर्षा की ऋतु में आना सूचक है कि काल रात्रि है अज्ञान, घनघोर वर्षा के बादल प्रतीक

है निराशा के। व्यक्ति के जीवन में जब भी निराशा एवं अज्ञानता आये तब-तब प्रभु शरण में जाकर उन्हें बुलाएं, तब कारागार के बंद द्वार की भांति सारी विकृतियाँ अपने आप दूर हो जाएँगी।

अवतरण से पहले नारायण ने बाल लीला के पांच संकल्प लिए थे।

1. कम से कम 11 वर्ष ब्रज धरा पर विराजेंगे।
2. ब्रज प्रवास के अन्दर वे अपने पग पर कुछ धारण नहीं करेंगे।
3. असुरों के उद्धार हेतु वे अस्त्र या शस्त्र नहीं प्रयोग करेंगे।
4. वे सिले हुए वस्त्र नहीं धारण करेंगे।
5. वे केश कर्तन नहीं करेंगे।

अपने इन नियमों का पालन करते हुए वे 11 वर्ष 56 दिन तक ब्रज में रहे एवं तदुपरांत मथुरा प्रस्थान किये एवं कंस का वध किया। उन्होंने कभी भी कुछ अपने पग में नहीं पहना तथा वे ब्रजभूमि पर नंगे पाँव ही रहे। इसीलिए उस भूमि की रजकण का इतना महत्त्व है। ब्रज का अर्थ है ब्रह्म रज अर्थात ब्रह्मस्वरूप परमात्मा की पग धूली। कृष्ण ने बाल रूप में जितने भी वध किये—पूतना, त्रृनासुर, सक्तासुर इत्यादि सभी का वध अपने हाथों से ही किया, किसी भी शस्त्र का प्रयोग नहीं किया। सुदर्शन चक्र धारण तो उन्होंने मथुरा जाने के पश्चात किया। सारी बाल लीला में वे एक पीताम्बरी लपेटे रहते हैं। उनके घुंघराले केश कितने अलबेले थे, वह सभी को पता ही है।

मात्र एक सप्ताह की आयु में पूतना का वध किया। पूतना क्या है? पूतना अविद्या है जो हमारे अन्दर बैठी है एवं कुसंस्कारों का विष नित्य पिला रही है। इस विष को हमें बाहर निकालना है एवं अविद्या से विद्या में प्रवेश करना है।

त्रृनासुर द्योतक है हमारे अन्दर विद्यमान अहम का, जो होता तो तृण के समान भारहीन, पर उड़ा ले जाता है हमें बहुत ऊँचे, जहाँ हमारा अहम हमें

समाप्त कर देता है। इस अहम पर विजय पानी है तो हमें अपनी गुरुता बढ़ानी होगी तथा इस अहम को नीचे धरातल पर फेंकना होगा।

सत्तासुर अंतरात्मा पर एक बोझ है जो हमें दबा रहा है। वह बोझ हम ढोये चले आ रहे हैं। इस बोझ को एक झटके से हटा देना है। इसे सदा सर्वदा के लिए समाप्त कर देना है।

लीलाधारी की हर लीला एक जीवन संदेश देती है। जीवन जीने का ढंग सिखाती है। कालिया मर्दन पर्यावरण के बारे में, नदी की पवित्रता एवं स्नान के ढंग को बताती है। माखनचोरी की लीला बताती है कि हमें अपने हक को कैसे भी सुरक्षित रखना है। माखन उस समय कर के रूप में कंस के यहां जबरन ले जाया जाता था, उसके विरोध में माखन की उपलब्धि कम करने हेतु यह लीला की गई। सबसे बड़ी लीला जिसे प्राय: आज के तथाकथित बुद्धिजीवी कृष्ण को अय्याश बताने में लगे हैं, वह है रास लीला।

रास रस से उत्पन्न हुआ है, गोपी इंद्रियों की प्रतीक हैं। यह लीला इंद्रियों के शमन की लीला है। अध्यात्म की पराकाष्ठा है ये पांच अध्याय, जिसे पंच रास अध्याय भी कहा गया है। गोपी गीत समस्त उपलब्ध ग्रंथों का सिरमोर है। कनकमंजरी में लिखा यह अध्याय न केवल छांदस विधा का बेजोड़ नमूना है बल्कि आत्मा का परमात्मा के एकीकरण का दर्शन है। इन सभी रूपों को पदावली में प्रस्तुत करने का प्रयत्न है।

पदावली एक ऐसी विलुप्त होती काव्य विधा है जो भक्तिकालीन कवियों के बाद यदा-कदा ही लिखी जाती हो।

लुप्त काव्य विधाओं में मैंने कूट पद या दृष्टि कूट के बारे में लिखा है तथा अन्य छन्द जो आज के कवि भूल चुके हैं, उनके बारे में भी विस्तृत रूप से लिखा है। पद्य की यह विधा पदावली जो प्राय: लुप्त सी हो चुकी है आईये, उसके बारे में जानते हैं।

पदावली को पद, अष्टपदी, षष्टपदी या प्रवार्धित्पदी भी कहते हैं। इस

विधा का मध्यकालीन युग, भक्तिकालीन युग, स्वर्णिम काल था। इस विधा के बिना काव्य सम्पूर्ण नहीं माना जाता था। आज ग़ज़ल, गीत इत्यादि के कोलाहल में इस विधा को काव्य समाज लगभग भूल सा गया है।

अष्टछाप कवियों ने (सूरदास, परमानंददास, नाभादास, कुम्भनदास, गोविन्द स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, कृष्णदास) इसी विधा में अपनी सभी रचनाओं को कलमबद्ध किया है। तत्पश्चात कबीर ने और मीराबाई ने बहुतायत में पद की रचना की है। यह मध्ययुगीन काल की सबसे प्रचलित विधा थी, जिसके अंतर्गत तानसेन, बैजू बावरा, हरिदास जी आदि बड़े-बड़े संगीतज्ञ इसी विधा में गायन करते थे। भक्ति से सम्बंधित (सगुण धारा/ निर्गुण धारा) सभी कवि संत (मीराबाई, तुलसीदास, रैदास , कबीरदास, रहीमदास, नानक, तिरुवल्लुवर, ज्ञानेश्वर, मलिक मुहम्मद जायसी इत्यादि) ने इसी विधा में काव्य सरिता, ज्ञान गंगा, भक्ति पियूष को बहाया। यह विधा मुख्यत: भगवान से विनय करने हेतु, प्रेम हेतु, माधुर्य, विरह, करुण रस और उपदेश जैसी अवस्थाओं को निसृत करने हेतु ही होती है। यह एक ऐसी विधा है जिसमें काव्य, संगीत के माध्यम से स्वत: हृदय से निकलता है। इसे ध्रुपद गायन भी कहते थे।

पदावली के पद बैठकर लिखे नहीं जाते थे, बल्कि स्वत: गायन प्रस्फुटित होते थे। आज भी शास्त्रीय संगीत प्रेमियों के लिए यह विधा किसी अमृत से कम नहीं है। भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज, गिरिजा देवी, सुब्बलक्ष्मी इत्यादि सभी शास्त्रीय संगीत के गायक या वादक इसी पद विधा के अनुगामी रहे। यह विधा जितनी हिन्दुओं में प्रचलित थी, उतनी ही मुस्लिम कवियों के मध्य भी। सभी सूफी संतों ने इस विधा को अपनाकर अपनी रचनाएँ की हैं। यह विधा इसीलिए भी प्रचलित थी क्योंकि संगीत शास्त्र के सभी रागों में इन पदों का गायन संभव था जैसे, राग बिलावल, राग यमन, राग मेघ, राग मल्हार,

राग दीपक, राग भैरव, राग बाग़श्री, राग मालकौंस, राग हमीर, राग सिन्दूरा, राग वसंत इत्यादि। 'मुग़ले आज़म' का यह गाना सबने सुना होगा–'मोहे पनघट पे नंदलाल छेड़ गयो रे।' यह पदावली का श्रेष्ठ उदाहरण है। यह विधा गीत, ग़ज़ल, गीतिका विधा की जननी है।

आईये, कुछ इस विधा पर प्रकाश डालते हैं। यह मात्रिक छंद में लिखी जाती है। मुख्यतः यह बृज, अवधी, भोजपुरी, संस्कृत, खड़ी बोली, गुजराती, मराठी, राजस्थानी में लिखी जाती रही है। कबीरदास जी ने प्रायः पद मिश्रित भाषाओं में रचित किये हैं।

इस छंद में चार से अधिक पद होते हैं अर्थात पंक्तियाँ होती हैं। पहली पंक्ति को टेक कहते हैं जिसे प्रथम चरण भी कहा जाता है। इसी के आधार पर पूरी रचना कही जाती है। यह पंक्ति यानी टेर या टेक 10, 11, 12, 13, 15, 16, 18, 20, 22, 24 मात्राओं तक की हो सकती है। यह पंक्ति सम मात्राओं की भी हो सकती है और विषम मात्राओं की भी हो सकती है। इसके बाद दूसरी पंक्ति दो चरणों की होती है जिसमें एक निश्चित मात्रा के बाद यति होती है। कुछ उदाहरण – मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै। (16 मात्रा) जैसे उड़ि जहाज को पंछी, पुनि जहाज पर आवै। (14, 14 पर यति) बसो मेरे नैनन में नंदलाल। (19) मोहनि मूरति, साँवरि सूरति, नैना बने विसाल। (16, 11) अलबेला सजन आयो री। (15) चौक पुराओ, मंगल गाओ, मन रंग निशि पायो री। (16, 13) जाके प्रिय न राम वैदेही। (16) तजिए ताहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही। (16, 11) मनु तुम श्रद्धा को गए भूल। (16) उस पूर्ण आत्म विश्वासमयी को, उड़ा दिया था समझ तूल। (16, 14) जिन्हैं हरि भगति पियारी हो। (15) मात पिता सहजै छूटे, छूटे सुत अरु नारी हो। (14, 14) फल भखिहैं फिर सब उड़ि जइहैं। (16) जब लौं रसमय फल लटकत रह, तब लौं खगदल नित चहचइहैं। (16, 16) दीखै नित, चहुँदिशि मोहें नीलाभ। (19) शीश मुकुट कर मुरलि सुशोभित,

पहिने रे पीताभ। (19, 11) हम तो प्रेम नगर के वासी। (16) जहाँ रहत आनंद चन्द्र नित, बनकर पूरनमासी। (16, 12) तो इस प्रकार आपके मन में जो भी भाव आये, आप उसे पद्य के माध्यम से निसृत कर सकते हैं। एक पूरे पद में कम से कम चार चरण होने चाहिए और ज्यादा से ज्यादा आप कितने भी कर सकते हैं। ज्यादातर पद के 6, 8 और 10 चरण ही लिखे गये हैं। मूलत: सबसे सरल चौपाई या अरिल्ल छंद का टेक होता है, जिसके आधार पर प्राय: पद लिखा जाता है। इसकी मात्रा संख्या 16 होती है और यति भी 16, 16 मात्राओं पर होता है। आईये, हम सभी संकल्प लें कि इस पुरातन विधा के पुनर्जीवित करने का कार्य करें।

देखिये, मेरा लिखा एक पद जिसमें 8 चरण हैं :-

भैया देखो अनोखा संसार रे।
संगी छूटे साथी छूटे, छूट जाए घरबार रे
आयी क़ज़ा और छूट चला, कष्ट भरा ये संसार रे
धूप छांव का खेला जीवन, मिलेंगे कष्ट अपार रे
करते दगा छलावा करते, दे घात बारम्बार रे
धन की महिमा देखी आली, बस इस पर ऐतबार रे
रिश्ते नाते अनजान बने, आया धन अहंकार रे
जिन्दगी की राह शूल भरी, जीवन का यही सार रे
'इंदु' बुझे और बुझाए है, प्रभु लीला अपरम्पार रे
भैया देखो अनोखा संसार रे।

प्रस्तुत पुस्तक **कृष्ण भक्ति के 92 पद** और **राम भक्ति के 21 पदों** का संकलन है, जिन्हें मैंने पिछले तीन वर्षों में (14 जुलाई, 2020 से 4 अगस्त, 2023 के मध्य 1116 दिनों में। मैंने 1000 भजनों की रचना कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया था।) लिखे हैं।

कई पदों की रचना सूरदास, तुलसीदास के पदों से प्रेरित होकर की गई

है। सूरदास जी एवं तुलसीदास जी के शब्दों को मैं क्या आधुनिक काल में कोई छू नहीं सकता परन्तु उनके शब्दों से, भावों से प्रेरित होकर रचना का प्रयास अवश्य कर सकता हूँ। बस यही प्रयास इस पुस्तक के रूप में है। आपका आशीर्वाद मिलता रहा है, आगे भी मिलता रहे, यही निवेदन है।

मैं आभारी हूँ **रचना सरन जी** का, **मीतू कानोड़िया जी** का एवं **चन्दा प्रह्लादका जी** का जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक को वर्तमान रूप में लाने में विशेष योगदान दिया।

कोई त्रुटि हो तो अवगत अवश्य कराएं ताकि अगले संस्करण में संशोधन कर लिया जाए।

आपका

सुरेश चौधरी 'इंदु'

पौष शुक्ल द्वादशी 2081

प्रतिष्ठा द्वादशी

11 जनवरी, 2025

भूमिका

इन्दु पदावली : भाग-एक (कृष्ण भजन)

पदावली पद्य की एक ऐसी विधा है जो वर्तमान में लुप्तप्राय: सी हो गई है। मध्यकालीन (भक्तिकालीन) युग इस विधा का स्वर्णिमकाल माना जाता है जब मीराबाई, तुलसीदास और सूरदास जैसे कवियों ने इस विधा को सृजन का आधार बनाया था। पदावली का प्रयोग मुख्यत: प्रभु से प्रेम, अनुरोध, विरह या करुणारस अथवा ज्ञानोपदेश निसृत करने हेतु किया जाता था।

भगवान श्रीकृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम, समर्पण और आराधना के माधुर्य का संकलन है **श्री सुरेश चौधरी जी** द्वारा रचित **इन्दु पदावली : भाग-1 (कृष्ण भजन)**। उत्कृष्ट प्रांजल शैली में अलंकृत भावनाओं की रत्न सम्पदा वीणापाणि का प्रसाद प्रतीत होती है।

इन्दु पदावली का प्रथम रत्न प्रथम पूज्य विघ्नहर्ता श्री गणेश जी को समर्पित है।

''प्रथम वंदन करूँ चित्त लेय, किरपा मोपे कर दीजो,
गजानन गणपति दु:खहर्ता, विघ्नेश विघ्न हर लीजो।''

इस प्रार्थना के साथ ही श्री सुरेश चौधरी जी ने अपनी समस्त अपेक्षाओं और प्रक्रम के परिणामों को नाथ उमासुत के चरणों में अर्पित कर पदावली का श्रीगणेश किया है। पदावली भाग-1 के 92 भजन श्रीकृष्ण को संबोधित हैं, जिनमें कहीं उनके दर्शन के लिये भक्त का आग्रह है—

''कब तक अश्रुभार ढोऊंगा श्याम प्यारे...''
''लौट के आ जाओ सांवरिया...''

तो कहीं विरह की पीड़ा—

''कर गये थोड़े दिन की प्रीत श्याम...''

कहीं कृष्ण के सौम्य स्वरूप का वर्णन है—

''कितने दिन बीते देखें नहीं सखी मोहन..''

तो कहीं उनके कष्ट निवारक करुणामयी भक्तवात्सल्य का चित्रण—

''जब-जब दीनन भारी पीड़ पड़े...''

''गुण क्या गाऊँ नाथ तुम्हारे....''

इन्दु पदावली में कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम भाव को मीरा की भाँति उजागर किया गया है। जैसे मीरा गिरिधर नागर को अपना प्राणेश्वर मानती हैं, पदावली में भी आत्मिक मिलन की साध है जिसके चलते आराध्य को उलाहना देकर अपने आपको सांत्वना दी गई है। नश्वर शरीर की पीड़ा और आत्मा की वेदना, स्वयं की निर्विशेषता का आभास, दर्शन का निमित्त बन पदावली में ढल जाता है, तब उद्गार कुछ ऐसा होता है—

''दुष्कृत कर्म क्षण क्षण क्षरित तन, के होते विषय उपाहारी,
अंबर अम्बुद भ्रमित भानु हर, मानव कुटिल मैं अहंकारी।
ज्यों ज्यों तन पीड़ा गहराई, स्मृति जागृत हुई मनोहारी,
कर्मफल के कर्मत्व का कर पुनर्लेखन हे वृष्णिधारी।''

पदावली में अलंकारों का अप्रतिम प्रयोग किया गया है—

''तान तरंग तरनि तनुजा तले, तरु तमाल तर छंटनी तट है...''

अनुप्रास अलंकार का मनोहर उदहारण है।

व्यंजना का चमत्कारी लालित्य देखते ही बनता है—

''मात देख सस्मित छवि हरि हर्षावे,
प्रीत के गीत प्रेरक गावे, मैया नवगीत खिलावे,
पद्मगंधा दूध उफन रहो, कान्ह उतार गोद जावे।''

दृश्यों का जीवंत वर्णन ऐसा है कि जैसे शब्दों के रूप में चलचित्र चल रहा हो। देखिए, बाल हरि रूप का कैसे अद्भुत वर्णन किया गया है—

''कटि करधनी केयूर बाँधे, भाव मलय तिलक लगाए,
पग शिंजनी छन-छन कर बजे, ठुमकत हरि खेल दिखाए,
अधर मध्य वेणु ध्यनि रम्यक, यशोमति स-नेह बुलाए,
भुवनेश्वर की लीला न्यारी, त्रिभुवन मुखमाय दिखाए।''

इन्द्र के कोप से लेकर फागुन मास में छायी ब्रज की मस्ती को पदावली में वर्णित किया गया है अर्थात् कृष्णलीला का कोई भी अंश इन्दु पदावली में भक्ति से अछूता नहीं रहा है। बानगी देखिए—

''आ कुब्ज़ा विदुर ध्रुव प्रह्लाद, सबके काज सँवारे,
मधुर भाव खाये शबरी फल, खट्टे मीठे खारे,
बंध्यो ऊखल में दधि खातर, सुत कुबेर के तारे।''

इसके दूसरे अंश में समाहित **21 भजन प्रभु राम** को समर्पित हैं।

इन्दु पदावली के सभी पदों की लयबद्धता और ध्वन्यात्मकता कलात्मकता की पराकाष्ठा है और श्री सुरेश चौधरी जी की समृद्ध लेखनी का उदहारण भी।

साहित्य की इस प्रकृष्ट कृति के लिए उन्हें साधुवाद!

रचना सरन
सदस्य पश्चिम बंग हिन्दी अकादमी
अध्यक्ष रचनाकार-एक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्रान्ति

अनुक्रमणिका

1.	नाथ उमासुत विनिति मोर सुन लीजो	19
2.	अगाध कष्ट मेरे हरो ले शरण नाथ गिरधारी	20
3.	अब तो सब सांची बात रही कान्ह तिहारी	21
4.	आ भी जाओ वापस कृष्ण मुरार	22
5.	आजा श्याम लादे ख़ुशी गुनगुनी	23
6.	आलि रात देयो विचित्र सपन	24
7.	आलि ब्रज धरा की शोभा श्याम रे	25
8.	आलि कैसे देखूं सपनेहुँ श्याम मुरारि	26
9.	आली सुन जब ब्रजधाम जल में समाया	27
10.	आली कहीं न जाय नेह निहारि	28
11.	अँखिया मेरो बड़भागन बस्यो इनमें श्याम	29
12.	उधो वही करिहें जो तुम समझाये	30
13.	ऐसा ही होता सुन भृंग	31
14.	ऐ सखी सुन नई बात है आई	32
15.	कब तक अश्रुभार ढोऊँगा श्याम प्यारे	33
16.	कर गए थोड़े दिन की प्रीत श्याम	34
17.	कष्ट हरण को मार्ग दियो बतलाय	35
18.	कितने दिन बीते देखे नहीं सखी मोहन	36
19.	कृपा करो हे गोविन्द! हे गिरधारी	37
20.	किस विधि होई साध दरस की पूरी	38
21.	गा रहे गोपाल लाल सुंदर राग नट हैं	39

22.	गुण क्या गाऊँ नाथ तुम्हारे	40
23.	चातक भी स्वाति बूंदों को तरसते	41
24.	चल मनवा वृंदावन की ओर	42
25.	लौट के आ जाओ सांवरिया	43
26.	जब जब दीनन भारी पीड़ पड़े	44
27.	जमना तट गोपाल राग नट गाय रहे	45
28.	जेहि विधि पुकारे, प्रभु तेहि रूप आये	46
29.	दामोदर कहायो जब ऊखल बन्धाओ	47
30.	देखि श्यामसुंदर छवि हृदय पुलकित हुआ जाये	48
31.	नन्द को दुलारो मोहन प्यारो रस की खान	49
32.	नट राग वेणु से सुंदर गोपाल बजा रह्यो	50
33.	नटखट छोड़ तुझे रह्यो न जाय	51
34.	प्रभु देख जग-व्यथा मन मेरो घबड़ावे	52
35.	प्रभु वृन्दावन बिहारी लाल है	53
36.	प्रभुजी तू है अगम्य असीम अपार	54
37.	प्रभु जी भक्तों के विपदाहारी अवलम्ब	55
38.	प्रिये मुझे प्रीत की रीत क्यूँ नहीं सिखलाते	56
39.	पार लगा सांवरिया बीच भंवर नैया	57
40.	बरस रहे रात दिन अश्रु धारे	58
41.	बाल रूप हरि को नैनों में बस जाए	59
42.	बृज पर घन कर घमंड घिर आये	60
43.	ब्रज की दशा भी उधव कभी गाइये	61
44.	मन मेरो हरि चितवन में उलझ्यो	62
45.	मन बैरी लागा मोरा जगत खेल में	63

46. मन में बसी श्याम छवि प्यारी 64
47. मदन मोहन सपने में खूब तड़पाये है 65
48. मनमोहन पास न क्यूँ आते हो 66
49. मधुकर कह दे जो कछु हृदय विचारो 67
50. मात देख सस्मित छवि हरि की हर्षावे 68
51. माधव तेरी माया बड़ी विलक्षण है 69
52. माधव बिन विरहन किस विध रहे 70
53. मुझे प्रीत की रीत सिखा दे श्याम 71
54. मोहन चित्त मोह लगाना 72
55. मेरे कान्हा सा कृपालु कहाँ किसी जन में 73
56. मेरो मन गिरधर छब पर अटक्यो 74
57. मनोहर श्याम छवि मन बस जावे 75
58. मोहन तिहारे मुख पर न्योछावर जाऊँ 76
59. मैया निरत निरखत नयन नशीलो 77
60. मोरी निंदिया उजाड़ गयो रे श्याम 78
61. मोहन की मोहक छवि नैनन मध्य रहे 79
62. राधा रमन छब अद्भुत मन पावत 80
63. लीलाधारी केशव विश्व विधाता 81
64. लौट आ कन्हैया क्यों और तड़पाये 82
65. वारिज दृग वारिद वर्ण गल मुक्ता हार 83
66. विरहानल अगन से तप्त कहलाती 84
67. वियोग तड़प तड़प्यो मन गावे 85
68. श्याम संग छाई फागण की उमंग 86
69. श्याम दरस बिन मन बुझ्यो बुझ्यो जाय 87

70.	सुन लो केशव मेरी पुकार	88
71.	सखी क्रूर अक्रूर रह्यो आय	89
72.	सखी रात सपने में खूब रोई थी	90
73.	सपने आय श्याम निंदिया उजाड़ गयो रे	91
74.	सावन बरसे तो बरसे नैन क्यों नीर रहे बरसाय	92
75.	सीने में छिपा दर्द बाहर कैसे लाऊँ मैं	93
76.	सखि री रात सपने छेड्यो श्याम आय	94
77.	सखी कान्ह सपनेहुँ बहुत गरियायो	95
78.	सखि देख्यो आज एक सपनो	96
79.	सखि भली नहीं नैनन की संगति	97
80.	सखि री मन गोविंद संग लागा	98
81.	हर घड़ी आनंद बिरज छायो	99
82.	हर्षित तन गोविंद मन बसाए	100
83.	हरि नारी कल्याण हेतु प्रकट भयो	101
84.	हे पार ब्रह्म परमेश्वर दूर कर अहंकार	102
85.	हे गोविंद! हे गोपाल! हे जग तारण हार	103
86.	हे गोविंद! हे गोपाल! कृपा करो	104
87.	हे सखी दुखी करै नित रजनीकर	105
88.	हरि बालक सो कैसो खेल रचायो	106
89.	हमें प्यारा लागे श्याम बांकुरा	107
90.	हरि हरि मन निरंतर सुमिरन करै	108
91.	होली ने इस बरस मालामाल कर डाला	109
92.	हियो श्याम तन लाग्यो अब तो सुध लीजे	110

राम भजन

93.	आ बड़ी देर हो रही तारणहार	112
94.	कृपा करो राम तुम्हारी	113
95.	जग में कृपालु अवध बिहारी हैं	114
96.	दो अक्षर मात पिता हैं मेरे	115
97.	प्राणी पी ले प्याला राम रस का	116
98.	ब्याहने जनकपुर आये चारों भाई	117
99.	मातु जानकी प्रभु को मेरी याद दिला देना	118
100.	मेरे राम सो दूजो कोई न नाम रे	119
101.	मैं दीन प्रभु दीनदयाल हैं राम	120
102.	याद मेरी श्रीराम को दिला देना	121
103.	राम शरण आ जा चरण कमल धरे	122
104.	राम जी जैसों न कोई दूजो तारणहार	123
105.	राम जी ही हैं मेरे तारण हार	124
106.	राम जी मैं सुख कैसे मन मेरे लाऊँ	125
107.	राम सुगम माँ बाप की नाई	126
108.	राम जी सुफल करेंगे सब काम	127
109.	ले चलो साथ रघुपति गुण गाऊँगी	128
110.	विनती इतनी रामचन्द्र सुखदाई	129
111.	सुमर ले मनवा राम का नाम	130
112.	सिमरन कर ले रे मनवा नाम राम का	131
113.	हे राम तेरे नाम में ही अपनत्व है	132
114.	परिचय	133

नाथ उमासुत विनिति मोर सुन लीजो।
वंदन प्रथम करूँ चित्त लेय, किरपा मोपे कर दीजो
गजानन गणपति दुःखहर्ता, विघ्नेश विघ्न हर लीजो
पाप घणो कीन्हो जग में आ, शंकरसुत यो विष पीजो
हे बुद्धि के दाता विधाता, गुण पाऊँ ऐसा कीजो
विपदा हरी मंगल कारी, पूर्ण जग सहारो दीजो
हे पार्वती के दुलारे आ, मनोरथ पुरण कर लीजो
एकदंत दयावन्त गणेश, जगत जीवन तार दीजो
'इंदु' विपदा आई घनेरी, आ प्रभु किरपा ऊलीझो
नाथ उमासुत विनिति मोर सुन लीजो।

अगाध कष्ट मेरे हरो ले शरण नाथ गिरधारी।
यथार्थ के व्योम में वेदना, नियति से है उत्सर्जित भारी
क्या कहूँ कैसे कहूँ प्रभु मैं, व्यथा अचित्रित पापाचारी
दुष्कृत कर्म क्षण क्षण क्षरित तन, के होते विषम उपाहारी
अंबर अम्बुद भ्रमित भानु हर, मानव कुटिल मैं अहंकारी
ज्यों ज्यों तन पीड़ा गहराई, स्मृति जागृत हुई मनोहारी
कर्म फल के कर्मत्व का कर, पुनर्लेखन हे वृष्णि धारी
सत्य के शोध संग अनाग्रह, सत्य युक्त साधना हमारी
हे पुरुषार्थ के नव आलोक, सुख दुख के पोषक अवतारी
हर भव बाधा 'इंदु' देह की, हे प्रभु माधव रास बिहारी
पल पल संप्रेषण शेष, आत्मसात स्वाध्याय तुम्हारी
अगाध कष्ट मेरे हरो ले शरण नाथ गिरधारी।

अब तो सब सांची बात रही कान्ह तिहारी।
फागन की मस्ती में गारी, दे रही आय ब्रज की नारी
फोड़ी मटकी माखन की जो, तूने बदला लेवे सारी
सीधो मोरो श्याम जान कर, स्नेह दिखावे है महतारी
कोटि जतन कर शपथ ले कहै, रंग डाल्यो हमे गिरधारी
सावली सुरत प्यारी प्यारी, तुम पर हम ग्वालन बलिहारी
हैं 'इंदु' ब्रजनाथ सुखदाता, छबि देखी मन युक्ति बिसारी
अब तो सब सांची बात रही कान्ह तिहारी।

आ भी जाओ वापस कृष्ण मुरार।
केशव छोड़ गए वृंदावन, पहुंच गए मथुरा सरित पार
गए माधव तो क्या गए तुम, आते क्यूँ नहीं मेरे द्वार
छलिया छल से चुरा माखन, फोड़ी मटकी झपट्टा मार
वेणु बजाना धेनु चराना, याद आये मुझे बारम्बार
आजा मोहन मधुवन सूना, रचा रास आ कर तू मुरार
धेनु स्तन भी सूखे हो चले, सांवरे कौन करे उद्धार
'इंदु' जमना तट खड़ी सखियाँ, जोह रही बाट पंथ निहार
नयन नीर भी सूख चले अब, तक तक ये राह बारम्बार
आ भी जाओ वापस कृष्ण मुरार।

आजा श्याम लादे खुशी गुनगुनी।
कृष्ण पिया बिन लागे होली, कैसी सूनी सूनी
घर आंगन कुछ भी न सुहाए, होली है बुझी बुझी
चोक पुराउँ द्वार सजाऊँ, होली बदरंग हुई
फागण अगन लगावे प्रियतम, चैन गया नींद गई
हिवड़ा अकुलावे दरस दिखा, भेज सन्देश कागा
होली किस विध गाऊँ प्यारे, करती रहि रतजागा
'इंदु' ढप मंजीरा मन बाजे, डोले चित्त फाल्गुनी
सहज सांवरो हिवड़े बैठ्यो, खुशी देवे चौगुनी
आजा श्याम लादे खुशी गुनगुनी।

आलि रात देख्यो विचित्र सपन।
मटकी शीश धरी दधि बेचन, जाय रही थी व्रज गलियन
मन उलझ्यो श्यामसुंदर संग, घसीट देह ले गयो वन
सुधि आई तो लाज लगी ज्यूँ, मत्त वितुण्ड अंकुश चुभन
कान्हा को मद ऐसो चढ़्यो, गिरा महावत सो भय मन
प्रेम सरोवर डूबी ऐसी, गेह नेह तोड्यो बन्धन
ज्यूँ सिंह दहाड़ गज दर्प का, कर देती है शीघ्र शमन
'इंदु' तिरछी नजरें श्याम की, घायल करती है चितवन
आलि रात देख्यो विचित्र सपन।

आलि ब्रज धरा की शोभा श्याम रे।
पुष्प रहित निर्माल्य सी, भई सजनी बिनु श्याम रे
अक्रूर भयो क्रूर गयो, ले ब्रज से छीन श्याम रे
राजा कंस तोहे कौन, काम को आयो ध्यान रे
प्रीत श्याम की चुभे हृदय, काहे दे गयो ज्ञान रे
नाथ ऐसी सहाय करो, रुके हरि को प्रस्थान रे
स्वर्ण रथ लाये अक्रूर, बैठा कृष्ण बलराम रे
'इंदु' उर खूब घुमड़ रोवे, उजड़ डाल्यो ब्रजधाम रे
आलि ब्रज धरा की शोभा श्याम रे।

आलि कैसे देखूं सपनेहुँ श्याम मुरारि।
बैरी पीड़ा दे गयो अजब, करवट बदलूँ रात सारि
एक पल भी चैन न पड़े है, इतउत फिरूँ मारी मारि
सखी आवे निन्दिया तब ना, सपनेहुँ देखूं गिरधारी
शीतल पवन शशि की चांदनी, शैया अंग अंग जरारि
विरहानल जली बावरी रे, श्याम बिन कौन ताप हारि
'इंदु' चन्दन की शीतलाई, वियोगिनी मन धीर धारि
आलि कैसे देखूं सपनेहुँ श्याम मुरारि।

आली सुन जब ब्रजधाम जल में समाया।
घन घन गहन घनघोर बरसे, कुपित इंद्र ने बरसाया
हुए क्रोधित शचिपति, गोविंद ने जब पूजन रुकवाया
चमकत चपला दस दिशा दुसह, घोर वारिधर गरजाया
प्रबल प्रेरित पवन प्रवाह था, तब समस्त ब्रज घबराया
रक्षा कर श्री कृष्ण हमारी, यह स्वर चहुँ ओर गुंजाया
आर्त पुकार सुन दौड़ आये, तरजनी पर्वत उठाया
दिवस सात यूँ ही खड़े रहे, बिरज को इस विधि बचाया
पूजो तो पूजो वन पर्वत, देते यही हमें समझाया
प्रकृति देती गिरि शिखर देते, खेत खलियान बतलाया
'इंदु' कृपानिधान अति दयालु, गोवर्धन तब पूजाया
आली सुन जब ब्रजधाम जल में समाया।

आली कहीं न जाय नेह निहारि।
विधाता हुए देख प्रतिकूल, करहुं काज सब विचारि
याद करि बातें उन दिनन की, मन बहुत दुख उपारि
मोर प्रियतम सत्य शील स्नेह, सुख घणो उदधि वारी
खेलत अबीर गुलाल होरी, आवत बतियाँ सारी
फूलन में झूलन बगियन में, भिगा मारि पिचकारी
उदधि बैरन मीन को नाहीं, श्याम वियोगी बारी
मन कुटिल करि दीन्हों सोचि, कुतर्क हम सब भारी
श्याम सुंदर है नहीं वैसो, चाहत गोकुल नारी
फागुन आयो देखो खेलन, आयेंगे मदन मुरारी
कहे 'इंदु' प्रभु जी की लीला, समझे प्रभु जी न्यारी
आली कहीं न जाय नेह निहारि।

अँखिया मेरो बड़भागन बस्यो इनमें श्याम।
मोहनी सूरत मोहनी मूरत, नैना समाय आठो याम
करे विश्वास हिरदे पर हम क्यों, मन को मोहन से क्या काम
सभी इन्द्रियां तो हो गयी शिथिल, देखें अँखिया छवि अभिराम
प्रभु लगा दे नैन अंग प्रत्यंग, सब ओर हो सुख परमधाम
काले श्याम काली पुतली बसे, श्वेत पटल आयी ज्यूँ शाम
रोम रोम थिरकत है गावत है, गोविंद 'इंदु' करे प्रणाम
अँखिया मेरो बड़भागन बस्यो इनमें श्याम।

उधो वही करिहें जो तुम समझाये।
विरहानल से जल रही उधो, काहे योग सिखाये
अधमरी सभी सखियाँ काहे, रहस्य ज्ञान बताये
ये गोप गोपी गाय बछड़े, अनुरक्त हुए जाएं
कृष्ण रूप माधुरी पान करि, दृग रूप न बिसराये
दीन मलिन क्षीण भयो मण्डल, जल हीन मीन आये
जानत 'इंदु' प्रीत दुखदायी, कान्हा सो ललचाये
कृष्ण कन्हाई स्वामी मेरे, करते जो मन भाए
वाको सोहे है तड़पाना, वो ही तो सुख लाये
उधो वही करिहें जो तुम समझाये।

ऐसा ही होता सुन भृंग।
सुख ना पावे कोई जग में, कर प्रीत इक अंग
एकांगी प्रेमी की ये गति, मरे ऐसे ढंग
चातक मीन मृग सर्प हम बने, चाहें हमी संग
काहे को करे मेघ चिंता, आर्त रटे विहंग
मीन तड़प जल बिन तन त्यागे, सलिल सदा असंग
मणि ना समझे पीड़ा जिस बिन, विकल रहे भुजंग
बधिक को बाण ना दिखे उसे, धुन मोदित कुरंग
मेघ कृष्ण, गुण वारि, रूप मणि, मुरली धुन तरंग
तुलसी 'इंदु' कहे, मन लागा, क्यों करे रस भंग
ऐसा ही होता सुन भृंग।

ऐ सखी सुन नई बात है आई।
बृज धरा सकल सुरपति से ले, मदन ने मिल्कियत पाई
दूत बने काम देव के घन, उड़ते बक माथ सजाई
चपला दण्ड पताका सुंदर, पिक यश गान मदन गाई
चातक चकोर मोर भ्रमर सुक, पुष्प पवन बने सहाई
मन्मथ मन्मथ नाथ बिना आ, बृज डेरा अब बसाई
कोई न दबा सकता सीमा, जब थे बृज राम कन्हाई
तुलसी को पद मनोहर 'इंदु', कौन करे बृज ठकुराई
ऐ सखी सुन नई बात है आई।

कब तक अश्रुभार ढोऊँगा श्याम प्यारे।
नयन शुष्क हो चले हमारे, दरस तो दे दुलारे
कब तक जियूँगा तुम बिन श्याम, भाव सुकोमल धारे
टूट रहा विश्वास जगत से, कौन बिगड़ी सँवारे
सुख का हर कतरा चढ़ जाता, दुख के खाते सारे
संबंधों की निश्चलता तो, कठिनता से गुजारे
अब कैसे मिटेगा अहम यह, बता ईश्वर हमारे
'इंदु' संग्राम अंतस में है, तू ही प्रीत जगारे
श्याम सांवरे आवरण त्याग, इस युद्ध से बचारे
कब तक अश्रुभार ढोऊँगा श्याम प्यारे।

कर गए थोड़े दिन की प्रीत श्याम।
कहां वह सुघड़ घनी प्रीत थी, कहां विरह की शाम
दो दिन कह गए कृष्ण मथुरा, भूल गए ब्रजधाम
मुड़ मुड़ देखूं मोहन मधुबन, तके नयन अभिराम
छूटे विरह अनल में ऐ सखी, क्रोध मद लोभ काम
गोविंद दर्शन बिना छटपट, करे प्राण निष्काम
गिरधारी कर दया 'इंदु' पर, प्रीत की लौ सकाम
कर गए थोड़े दिन की प्रीत श्याम।

कष्ट हरण को मार्ग दियो बतलाय।
प्रभु तू ऐसो बड़ो दयालु, तेरो वर्णन कियो न जाय
सांझ सबेरे पूजन कर लूं, मेरी तिमिर रात्रि ढल आय
झुलूँ आस निराश के झूले, तेरी कृपा ही इसे रुकाय
सजल नैन दर्शन को तरसे, आशीष दो दया बरसाय
प्रीत सिंधु में नैया डोले, रुक रुक बहुत रही तरसाय
पांच विकारों की गठरी यह, माथे बोझ भारी बढ़ाय
ऐसो ज्ञान समझ जो माने, वो ही मनुज ज्ञानी कहाय
'इंदु' को सद्बुद्धि दे दो प्रभु, ये पापी जीवन तर जाय
चंचल चितवन नैन नशीले, बंशी अमी रही छलकाय
साँवरे तेरी छवि निरख ये, नैन दृग जल रहे बरसाय
दशा 'इंदु' उर की समझो प्रभु, कैसे कैसे शोर मचाय
श्यामसुंदर प्रभु तारण हार, सृष्टि कष्ट आकर मिटाय
कष्ट हरण को मार्ग दियो बतलाय।

कितने दिन बीते देखे नहीं सखी मोहन।
सखि नवल किशोर नंद नंदन, मुख आभासित सम्मोहन
वा शोभा वा कान्ति बदन की, कोटिक शशि नभ आरोहन
वो सस्मित मुख मनहर न्यारो, वा तिरछी तिरछी चितवन
वो नटवर नागर वेश धरे, घायल अंतर निरख नयनन
वो लाल यशोमति को सुंदर, निशि दिन निंदिया प्रबोधन
किस विध मिलूं प्राण प्यारे से, विरह अनल जला रहा तन
देखि रूप ब्रजराज रसिक को, भूले 'इंदु' प्रीत बोधन
हरि की लीला अद्भुत न्यारी, खो गयो मोर भोलो मन
कितने दिन बीते देखे नहीं सखी मोहन।

कृपा करो हे गोविन्द! हे गिरधारी।
बस्यो है छैल छबीलो, नैनन में रास बिहारी
है जाकी तिरछी चितवन, अलकावली घुघर वारी
केकि मुकुट मोहक मूरत, मोहन पीताम्बर-धारी
हिवडे उतर-उतर जाये, सुमधुर मुरली धुन प्यारी
जसोदा कौन तप कीन्हो, परब्रह्म कहे महतारी
बृज गोपंगना भाग तुमरो, छू सके कैसे सँसारी
निंदिया उडावे 'इंदु' उर, बैठ्यो कृष्ण मुरारी
किशोरी की किरपा रहे, आ दया करो बनवारी
कृपा करो हे गोविन्द! हे गिरधारी।

किस विधि होई साध दरस की पूरी।
तोर अभिमान मोहे रोके, रास बिहारी प्रीत की धुरी
मोहन हैं पूर्ण यज्ञपुरुष, उन बिन है यज्ञ विधि अधूरी
कैसे समझाऊँ स्वामी मैं, ढल रहा ये सूरज सिंदूरी
पति प्राणेश्वर ले लो ये तन, प्राण ढूंढे मृग की कस्तूरी
मोरो पति श्रीपति गिरधारी, रोको ना उड़े रँग कपूरी
बृज नार मिलन को जावे, 'इंदु' दिल नाचे ज्यूँ मयूरी
किस विधि होई साध दरस की पूरी।

गा रहे गोपाल लाल सुंदर राग नट हैं।
चल री सखी देखने मोहन, सुख भर रीते लोचन घट हैं
तान तरंग तरनि तनुजा तले, तरु तमाल तर तटनी तट है
चारुचन्द्रिका चंचलचितवन, शीश शिखिपिच्छ सन्निकट है
मंजुल मुक्ता मणि मेखला, वन धातु अंकित पीत पट है
मुरलीमनोहर मदिरमध्यम, लटकि लटकिलहलहाति लट है
तरंगित तान सुन सुन मोहे, कुरंग भृंग त्रिभंग निकट है
अंबर अमृत्य अति आनंदित, बरसाये पुष्प देव झट है
'इंदु' निहार निहार श्याम छवि, बसै हृदय मोहन नटखट है
गा रहे गोपाल लाल सुंदर राग नट हैं।

गुण क्या गाऊँ नाथ तुम्हारे।
आ कुब्जा विदुर ध्रुव प्रह्लाद, सबके काज सँवारे
मधुर भाव खाये शबरी फल, खट्टे मीठे खारे
बंध्यो ऊखल में दधि खातिर, सुत कुबेर के तारे
नाथ छोड़ गरुड़ दौड़ि आये, गज की सुन पग धारे
इंद्र रुष्ट हुयो तो उठायो, गिरि ओ नंद दुलारे
जब जब भीर पड़ी जग में, आय असुर सब मारे
बेगि आओ जगत पति मेरे, कष्ट हरो अब सारे
अम्बर की हटा काली छटा, दूर करे अंधियारे
'इंदु' पड़ी जब विपद दीन पर, आ तब कष्ट उबारे
मैं शरण पड़ा प्रभु जी दे दो, जीवन ज्योति उजारे
गुण क्या गाऊँ नाथ तुम्हारे।

चातक भी स्वाति बूंदों को तरसते।
गुंजित भ्रमर रस पान को, कमल पँखुड़ी पर मचलते
हृदय उष्णता कम करने, वारिद कण भांति बरसते
सजे सजाए सपने टूटे, सूखे पत्तों सा ये झरते
क्यूँ गए श्याम पिया छोड़, मथुरा किस विध तुम रहते
लौट आ शुष्क अधर मिलन, को वेणु गीत अब बजते
ओ रूठे पिया याद करूँ जब, तब दृग मोती जल बहते
मिलन 'इंदु' बन शिखर बिंदु, विरह गीत स्वतः निकलते
चातक भी स्वाति बूंदों को तरसते।

चल मनवा वृंदावन की ओर।
गोपी सङ्ग नित्य नृत्य करे, वेणु करती विभोर
कालिंदी तट पर बरस रही, प्रेम सुधा घनघोर
उड़ उड़ पहुंचे मेरा प्यासा, मन वृन्दावन धाम
जहाँ विराजे राधा रानी, हैं सङ्ग कृष्ण श्याम
आनंद मेघ की होती है, जहाँ सदा बरसात
बन बृजरज मलय पीयूष सी, महके है दिन रात
जहाँ पात पात की स्मृति में, 'इंदु' कृष्ण का वास
बृज धरा प्रेम की नगरी है, रचाते प्रीत रास
चन्द्र वदन मोहन को ढूंढू, बन बावरा चकोर
कुंजन में गुंजन में खोजूं, खींच प्रीत की डोर
चल मनवा वृन्दावन की ओर।

लौट के आ जाओ सांवरिया।
डाल डाल से पूछे जिया, कालिंदी तट ढूंढू पिया
लौट के आ मोहन प्यारे, फिर वैसी बजा बाँसुरिया
सुध बुध खो जाऊँ मुरारी, हो जाऊँ कन्त बावरिया
ऐसो छेड़ राग बसंती, अमिय रसवंती होय हिया
विरहागिन से हिरदय सुलगे, सुलगे ये तन की गठरिया
'इंदु' विरह के मारे नैन, कहे दरश दे श्याम छलिया
लौट के आ जाओ सांवरिया।

जब जब दीनन भारी पीड़ पड़े।
दौड़े आवै करुणानिधान, भक्तन कठिनाई दूर करे
गराह सो गजराज बचावन, पैदल ही माधव दौड़ पड़े
भरी सभा मे संकट आयो, आ प्रभु द्रौपदी चिर बढ़ायो
ब्रह्म बाण लग्यो उतरा को, गर्भ समाय शीतल करायो
प्रह्लाद पितु कष्ट सह रह्यो, फाड़ खम्ब नरसिंह बन आयो
दयी तीन लोक की संपदा, पाव चाउर को ऋण चुकायो
जेहि चरण निकली गंगा को, महादेव मस्तक बैठायो
द्वार खड़ो हो अतिथियन के, राजसूय में चरण पखरायो
भक्त 'इंदु' कहे हे गोविंद, तब दीनबन्धु नाम जग धरे
जब दीनानाथ भक्त वत्सल, प्रभु आय भक्त के कष्ट हरे
जब जब दीनन भारी पीड़ पड़े।

जमना तट गोपाल राग नट गाय रहे।
त्रिभंग छटा श्याम सुंदर की, ललित दृश्य रँजन मनाय रहे
हरसिंगार तरु तटनी तट पर, मोर चन्द्रिका गुंजा मंजुल
वनधातु वदन आकृति विभिन्न, पीतपट बंशी अधर संकुल
दृश्य मनोहरी देख देख, हर्षित होय रहे नर नारी
गोपों और गौओ का प्रेम, देख बड़ो ही विस्मय कारी
सब कुछ बस देख रही थी मैं, सुंदर प्रेम दृश्य था कितना
सच कहती सखि टूटे न कभी, ऐसा प्यारा सुंदर सपना
तभी झटका एक लगा मुझे, रे बिखरा सब कुछ सपने में
'इंदु' आंख मल उठ बैठी मैं, टूटा दिल संभाल रखने में
कुछ ना था धोखा आंखों का, जादूगर करतब दिखाय रहे
जमना तट गोपाल राग नट गाय रहे।

जेहि विधि पुकारे, प्रभु तेहि रूप आये।
हरि दीनबन्धु कृपा सिंधु हैं, सभी वेद पुराण गाये
मदमत्त कुबेर सुत हुए तब, निजको उखल बंधवाये
सुदामा की देख दीन दशा, छीन पोटली से खाये
बदले में चावल दानों के, जग सम्पदा पहुंचाए
गजराज ने जब हरि पुकारा, दौड़ ग्राह से छुड़वाए
चौसठ कलाओं के विज्ञ हरि, कैसो गुरु उन्हें सिखाये
संदीपन ने मांगी दक्षिणा, यमलोक से पुत्र लाये
मन की बात पढ़ प्रभु आपने, सब जन के काम सधाये
'इंदु' खड़ा समक्ष कर जोड़े, इसके भी काम बनायें।
जेहि विधि पुकारे, प्रभु तेहि रूप आये।

दामोदर कहायो जब ऊखल बन्धाओ।
हरि लीला और दिखानी थी, ऊखल बन्धन तो भायो
नारद शापित दो भाई को, मुक्ति शाप से दिलवायो
नल कुबेर मनिग्रीव बना तरु, यमलार्जुन नाम कहायो
दोउ वृक्ष नंद आंगने थे, हौले पग उधर बढ़ायो
ऊखल संग चल पड़े माधव, दो वृक्ष के बीच धायो
फँसाय पेड़ कमर बंधी ऊखल, धम से दो पेड़ गिरायो
यशोदा ऊखल कृष्ण बांध्यो, यमलार्जुन मुक्त करायो
कुबेर सुत यमलार्जुन को कर, मुक्त देवलोक पठायो
जेहि को कल्याण जगपति करे, शापित कैसे कहलायो
'इंदु' कान्ह जी की ये लीला, सुना बहुत पुण्य कमायो
दामोदर कहायो जब ऊखल बन्धाओ।

देखि श्यामसुंदर छवि हृदय पुलकित हुआ जाये।
शशिमुख मृदु रूप सौम्य शोभा, चरण सरोरुह हरि आये
चितवन चकोर चपल कटीले, घुँघर केश बल बल खाये
श्वेत दसन पंक्ति मोतियन सी, बिम्बाफल अधर लुभाये
है केकि पिच्छ मस्तक शोभित, गल वैजयंती सजाए
स्मित मुस्कान मदिर मुख पर, कोटि मन्मथ भी लजाये
धन्य धन्य भाग्य काग को छिन, श्रीपति से माखन खाये
बृज की छोहरियाँ पुण्य कीन्ह, जगपति को नाच नचाये
ब्रह्म को गुणगान 'इंदु' करे, ऋषि मुनि पूज पूज धाए
देखि श्यामसुंदर छवि हृदय पुलकित हुआ जाये।

नन्द को दुलारो मोहन प्यारो रस की खान।
लाल लोल ललित लहकत लिए, सङ्ग ऋतुराज रसाल सुजान
फूलन कंदुक पलटत खेलत, अर्कजा तट सकल गुण निधान
बाल गोपाल लाल सुगढ़ अति, छेड़त मधुर मदिर वेणु तान
गोवर्धन शिखर चारू मंजरी, देखि देखि पुलकित नन्द प्राण
कुसुमित कुंज द्रुम बेली केलि, करत श्याम संग सखा सुज्ञान
आभूषण धरे कंठ मोतियन, सिर मोर मुकुट पीत परिधान
सबहिं निरखैं गोविन्द न्यारो, गावे 'इंदु' प्रभु कीरति गान
मेरे प्रभु की महिमा न्यारी, प्यारो गिरिवर धारि भगवान
नन्द को दुलारो मोहन प्यारो रस की खान।

नट राग वेणु से सुंदर गोपाल बजा रह्यो।
सखी चलें तट लेन नैन सुख, तट तटिनी सुरतरु खड्यो
मस्तक मोर चंद्रिका धारे, मंजुल गुंज गुच्छ धर्यो
पीत पट तन ओढ़े कन्हाई, तन चित्र वन धातु मढ्यो
लख पशु पक्षी त्रिभंग मूरत, मुरली स्वर लहरी भर्यो
देव नभ बरसाय रहे पुष्प, गोप गौ शिथिलाय रह्यो
सुन ये बतियाँ गोपियाँ खड़ी, खाली भरो लिए घड्यो
ब्रज नार पहुंची तेहि मारग, 'इंदु' तन मन हरख उठ्यो।
नट राग वेणु से सुंदर गोपाल बजा रह्यो।

नटखट छोड़ तुझे रह्यो न जाय।
देह दे दूँ, गेह भी दे दूँ, बस नेह दियो न जाय
गैया दे दूँ, मैया दे दूँ, कन्हैया दियो न जाय
बाप दे दूँ, भैया दे दूँ, तुम बिन रह्यो न जाय
देह नेह सो विदेह बन्यो, संदेह कियो न जाय
नैना बरस रहे मेह नाईं, श्याम सूरत तरसाय
जमना तट बंशी बट छुट्यो, मनवा बेगो बुलाय
वृंदावन छाड़ि काहे गयो, बैरी बतियाँ सताय
'इंदु' सो मन शीतल करो प्रभु, याद तेरी बिसराय
नटखट छोड़ तुझे रहा न जाय।

प्रभु देख जग-व्यथा मन मेरो घबड़ावे।
छोड़ छाड़ि कामकाज सारो, घर में बैठ्यो पावे
तू नाग पाश बांध मोह को, तन डस विष फैलावे
भांति भांति से जुगत भिड़ायो, अब क्यूँ छुट्यो चावे
कलजुग में पाप कर्यो बहुत, इब अँधियारो छावे
हुयो जगत प्रधान धन केवल, धन फुट बाहर आवे
'इंदु' घट पाप को फुटयो तो, रोग शोक फैलावे
संकट में है जगती तेरी, क्यूँ ना बेगो आवे
गज को संकट हर्यो अब जग, कष्ट हरने बुलावे
प्रभुजी आ शीघ्र कल्याण करो, जग को क्यूँ तड़पावे
'इंदु' करे पुकार सुनो नाथ, सब तेरो गुण गावे
प्रभु देख जग-व्यथा मन मेरो घबड़ावे।

प्रभु वृन्दावन बिहारी लाल है।
ग्वालिन गोपी गौओं के प्रिय, गोकुल प्राण गोपाल हैं
सुर नर मुनि दुर्लभ चरण 'इंदु', भज ये नंद के लाल है
मेघ श्याम अनेक मन्मथ सम, कण्ठ मुक्ता श्रीमाल है
त्रिभुवन मोहन मनहरण वसन, पहने किंजल्क लाल है
किशोर मूर्ति अनेक गुणखान, सजा केकि पिच्छ भाल है
लोल कुंडल अरुण द्वय लोचन, गुंजा मनक की माल है
कच कुटिल मनोहरी तिलक भ्रू, मयंक मुख पद मराल है
श्याम सुंदर 'इंदु' त्रासहरण, अभिराम नयन विशाल हैं
प्रभु वृन्दावन बिहारी लाल है।

प्रभुजी तू है अगम्य असीम अपार।
तुम्ही आज भी हो कल भी हो, भविष्य के हो होवन हार
हर लेते दुःख कष्ट भय सब, करे जो स्मरण बारम्बार
गुरु किरपा से गाये नानक, सत गुण तेरे अपरम्पार
दिखता जो कुछ सब तेरा है, गोविन्द रूप तेरा सार
तू अनूप तू भूप तू नाथ, तुम्ही हो गुणों के भंडार
स्मरण कर इंदु भी बन जाए, प्रभु दीनन का पालनहार
है नानक मिलता परमात्मा, बड़े भाग्य बन खेवनहार
प्रभुजी तू है अगम्य असीम अपार।

प्रभु जी भक्तों के विपदाहारी अवलम्ब।
संकट में रह्यो प्रह्लाद तब, प्रकटे नर केहरि फाड़ खम्भ
झसराज ग्रष्यो गजराज जब, आये रक्ष को हरि अविलम्ब
कोटि नृप समक्ष लूटी लाज, राखी कि लाज राखि अदम्भ
नरनारि गयी उघाड़ी सभा, बढ़ायो पट कियो दमन दम्भ
आय बचाये ब्रज लोगन को, सुरपति गिराए अम्बर अम्भ
हे अकारण दीनदयालु प्रभु, बसौ हिरदे 'इंदु' गिरी कदम्ब
प्रभु जी भक्तों के विपदाहारी अवलम्ब।

प्रिये मुझे प्रीत की रीत क्यूँ नहीं सिखलाते।
कुंज गलिन में भटक रही मैं, तुम मथुरा जा रास रचाते
छोड़ गए तन्हा क्यों हमको, लौट गोकुल क्यों नहीं आते
अश्रु विरहानल जलन तड़पन, सब मेरे हिस्से क्यों आते
प्यार में हो पागल श्याम धनि, मेघ सा नयन नीर बहाते
स्वाति की बूंदें बनकर 'इंदु', पपीहा के मुख टपक जाते
भटक गली गली खोजूं तुम्हें, भँवरा कली मकरन्द पाते
साथ छोड़ मौजों का मिलती, ज्यों नदी सागर में समाते
श्याम छल प्रपंच आता नहीं, तेरी वेणु क्यों नही सुनाते
प्रिये मुझे प्रीत की रीत क्यूँ नहीं सिखलाते।

पार लगा सांवरिया बीच भंवर नैया।
तेरी मोहक मुस्कान लुटे, श्याम सलोने धेनु चरैया
चला चला तीर घायल किया, ओ गोविंद बंशी बजैया
आ कर्म ज्ञान मुझे सिखाया, माधव मधुबन रास रमैया
बांकी अदा ने बांका किया, तारण हार जगत खेवैया
'इंदु' कर्म ही धर्म बताया, केशव गीता ज्ञान रचैया
मेरे मन बस मोहन प्यारे, दाऊ के तुम प्यारे भैया
पार लगा सांवरिया बीच भंवर नैया।

बरस रहे रात दिन अश्रु धारे।
निकट रह बरसत बरसात ऋतु, मथुरा गए जब से दुलारे
अंजन नहीं टिके नैनों में, अश्रु बन करे कपोल कारे
आँचल भींगे भींगे चाली, उर बीच निकले अश्रु धारे
नैन नीर हुई देह मेरी, क्षणिक मिले कोई न किनारे
काहे भूल गए गिरधर तुम, प्रेम प्रीत गोकुल के द्वारे
'इंदु' सूरदास की लेखनी, कह कृष्ण लीला हमें तारे
बरस रहे रात दिन अश्रु धारे।

बाल रूप हरि को नैनों में बस जाए।
कटि करधनी केयूर बांधे, भाल मलय तिलक लगाए
पग शिंजनी छनछन कर बजे, ठुमकत हरि खेल दिखाए
अधर मध्य वेणु ध्वनि रम्यक, यशोमति स-नेह बुलाए
भुवनेश्वर की लीला न्यारी, त्रिभुवन मुख माय दिखाए
बांधने चली मात यशोदा, पुनि डोर छोट पड़ जाए
कोमल कमल चरण प्रभु जी के, नैनों में बस बस जाए
ब्रह्मा महेश ऋषि मुनि सन्त सब, एक नजर देखन आए
'इंदु' मन हर्षित देख हरि छव, सात जनम तर तर जाए
बाल रूप हरि को नैनों में बस जाए।

बृज पर घन कर घमंड घिर आये।
देख अपमान सुरपति विचारि, भर भर मेघ पठाये
चपला चंचल चम चमक रही, चहुँ ओर तिमिर छाए
गरजत बरसत घन उत्साही, प्रचंड जल बरसाए
करका पात समीर विकराल, वह हिम खण्ड गिराए
नंद से कुपित हुए शचिपति, नंद को सुत बचाये
विहँसी उठाय गिरि गोवर्धन, उंगली धर दिखाए
इंद्र सुनो बातें जगपति की, प्रभु रक्षा को आये
राघव बन माधव यहि अवसर, बृज को प्रीत सिखाये
तुलसी को पद सुंदर पढ़ि पढ़ि, 'इंदु' अब इसे गाये
बृज पर घन कर घमंड घिर आये।

ब्रज की दशा भी उधव कभी गाइये।
निज बुद्धि योग की बातों का, गान फिर कभी सिखाइये
माधव ने जिस कारण भेजा, मन सोच विचार लाइये
विरह व्यथा और परमार्थ में, अंतर सबको बताइए
परम ज्ञानी अंतरंग सखा, तुम हो उधव हम मानते
विरह जलधि में डूबी सखियाँ, तत्व ज्ञान नहीं जानते
कैसे भूलें कटीले नयन, और चंचल अलकावली
सस्मित मुख ललित वेणु वादन, वैजयंती मुक्तावली
निछावर कर दें हम योग की, युक्तियां वेणु पर आइए
निकाल ज्ञान 'इन्दु' अपना सब, केवल मोहन बिठाइए
ब्रज की दशा भी उधव कभी गाइये।

मन मेरो हरि चितवन में उलझ्यो।
घुमत फिरत श्याम छवि बुलावे, कमल नयन मन बस्यो
अरुण अधर दसन दुती राजत, जेहि मन्द मन्द हंस्यो
मुस्कान लगै जबहि श्यामजू, लगै मुख भुवन रख्यो
नित नूतन प्रीत चित्तहिं उपजै, मन चुरावे कनहियो
मन उत्कंठा माधो मिलन की, विचारी मन हरख्यो
'इंदु' मुख देख 'इंदु' मद बढ़े, रूप मनहर निरख्यो
मन मेरो हरि चितवन में उलझ्यो।

मन बैरी लागा मोरा जगत खेल में।
इत उत देखे जग की लीला, घिर घिर आय जग जेल में
सुहानी रात दिखे चहुँ ओर, खो गया रेलम पेल में
लोभ वासना का नशा चढ़ा, कैसे उतरे अमेल में
आय पड़ी लाठी नियती की, गिर पड़ा ठेलम ठेल में
कहे 'इंदु' भज कृष्ण मुरारी, न जाए जम फंदेल में
मन बैरी लागा मोरा जगत खेल में।

मन में बसी श्याम छवि प्यारी।
दुःख दर्द सब भूल गया, मैं आ शरण तुम्हारी
तू ही नाथ तारण हार, नैया आय सम्हारी
विपदा कितनी भी आई, आ तूने संवारी
ऐसी सूरत हृदय बसी, यही दुख हरे सारी
टेढ़ो नाम खडो टेढ़ो, टेढ़ी मूरत थारी
टेढ़ो रास रचा छेड़ा, टेढ़ी लीला न्यारी
'इंदु' उर फंस गयी फांस, टेढ़ी प्रेम रस वारी
छटा मनोहरी न्यारी, तेरी हे गिरधारी
मन में बसी श्याम छवि प्यारी।

मदन मोहन सपने में खूब तड़पाये है।
सखि सपना देखा है अद्भुत, द्रुम कानन सब मुरझाये हैं
सपने देखा हरि छोड़ गए, मथुरा जबसे अकुलाए हैं
धेनु भी ब्रज रेणु लोट रही, पशु खग सब अश्रु बहाये हैं
सौंदर्य लख सौंदर्य निधि का, नयना टकटकी लगाए है
उपवन में मृग भूल कुलांचे, गुमसुम से नजर टिकाये है
अधीर हुए कोकिला पिक सब, बैठे मधुर स्वर भुलाये हैं
माखन मटकी फोड़े ना अब, दधि माखन कौन चुराए है
'इंदु' वृक्ष शाखा जीर्ण हुई, वियोग शिथिल हुए जाए है
मदन मोहन सपने में खूब तड़पाये है।

मनमोहन पास न क्यूँ आते हो।
प्रीत वेदना बतलाते हो, कशिश विरह की लाते हो
पास बुला खेल रचाते हो, बंसी बजा लुभाते हो
आ भी जाओ रसिया तुम बिन, जीवन सूना सूना है
नींद कहाँ चैन कहाँ अब तो, सब कुछ छीना छीना है
बरसाने में मधुर प्रीत रस, जा जा तुम बरसाते हो
ब्रज गोपियाँ बेचैन ढूंढे, क्यों निर्मोही तरसाते हो
'इंदु' नैन मूंद लखूँ तो बस, आप ही नजर आते हो
क्यूँ भाते हो तड़पाते हो, झलक दिखा छुप जाते हो
मनमोहन पास न क्यूँ आते हो।

मधुकर कह दे जो कछु हृदय विचारो।
हम ब्रज बालायें बलियारी, संकोच न दोष मनहिं डारो
देख्यो कब नंद नंदन रास, न बाल विनोद कबहिं निहारो
बतावत बात नन्दलाल की, ज्यूँ ढेलों जल बीच उतारो
गए न प्राण श्याम संग भृंग, रह्यो देखनो बहुत न्यारो
सुनानो देखनो ही बच्यो, करम यो ही लिख्यो हमारो
मधुप कहो बात कही मोहन, जाहि तू कहने को पधारो
'इंदु' है श्याम मन प्रीत नहीं, मन की शंका आय उबारो
मधुकर कह दे जो कछु हृदय विचारो।

मात देख सस्मित छवि हरि की हर्षावे।
प्रीत के गीत प्रेरक गावे, मैया नवनीत खिलावे
पद्म गन्धा दूध उफन रहे, कान्ह उतार गोद जावे
फोड़ी मटकी मार कंकरी, दूध क्रोधवश बिखरावे
हाथ छड़ी मात पाछे भगे, श्याम कबहु न हाथ आवे
देख रुदन माय को आ गए, आंसू पोंछ के रुकावे
पकड़ कान्हा को मैया कहे, दूंगी सजा ना छुड़ावै
ऊखल से लगी बान्धने हरि, रस्सी छोटी पड़ जावे
दुःखी देख यशोमति मैया, खुद ही श्याम बन्ध जावे
है मोहन की लीला न्यारी, दामोदर तभी कहावे
'इंदु' बन्ध गए संग ऊखल, भक्तन हितकारी गावे
मात देख सस्मित छवि हरि की हर्षावे।

माधव तेरी माया बड़ी विलक्षण है।
तेरे सम्बन्ध की उष्णता, बनाये रखूँ यह प्रण है
निंद्रामग्न थका अनुभव है, नैन में रूप हर क्षण है
उम्र की चाशनी में पक पक कर, याद आयी तत्क्षण है
युग बीते भव मोह में फंसा, प्रभु मुझ पर तेरा ऋण है
युगांतर आधुनिकता में कम, आभासित तो श्रवण है
हृदय तपिश उबलते रेत सी, स्नेह हस्त वारिद कण है
इंदु आत्मीयता लुप्त हुई, सब कुछ तुम्हारी शरण है
अभिशिप्त अभीष्ट उद्विग्न हूँ, आप से जीवन मरण है
माधव तेरी माया बड़ी विलक्षण है।

माधव बिन विरहन किस विध रहे।
जिये न मरे रह रह उर जले, याद में तेरी दृगजल बहे
मौन प्रीत मेरी सुख देवे, अहि भुजंग कुरंग पतंग सी
दुख से कातर है निर्मोही, चकोर चातक मीन कंज सी
दुर्गम रहस्य प्रेमगति निठुर, कौन करि सके वर्णन जाको
मौन एकांगी प्रेम मलिन है, प्राण न निकसे चिंता वाको
ज्ञान उपदेश वज्र सो लगे, विदीर्ण हृदय टुकड़ों में बटें
एकांगी प्रीत कौन जाने, विरह अनल समीर स्वास हटें
अश्रुधार बहे बारम्बार, 'इंदु' विरहन उर क्या क्या सहे
व्रजराज निवारण दुःख करो, दीन दशा देख उचित कहे
माधव बिन विरहन किस विध रहे।

मुझे प्रीत की रीत सिखा दे श्याम।
छल प्रपंच इस प्यार का जरा, मुझे भी तू सिखला दे श्याम
रीत न जानूँ प्रीत की कृष्ण, क्यों मैं भटक रह गली गली
क्यों नदिया सागर से मिलती, क्यों भँवरा झूमे कली कली
क्यों राधा भटके कुंज गलिन, कान्हा मथुरा रास रचाते
छोड़ गए विरह में तड़पे, लौट क्यों न कान्हा तुम आते
तुम्हारे प्यार में हो पागल, अँखिया बरसे ज्यों हो बादल
स्वाति नक्षत्र तक हो सूखी, पीयू रटे पपीहा बेकल
'इंदु' त्याग तपस्या बहुत की, प्रेम का रूप दिखला दे श्याम
कान्हा तू प्रीत रख वारा, सारे जग को बतला दे श्याम
मुझे प्रीत की रीत सिखा दे श्याम।

मोहन चित्त मोह लगाना।
मान ले यशोदा की बातें, मथुरा न संग तुम जाना
क्रूर अक्रूर लेने आये, तुम बातों में ना आना
मात यशोदा पूछे उनसे, क्या ये है उचित बताना
बलराम कृष्ण बालक भोले, यूँ उनका हर ले जाना
जीवन आधार ब्रजधाम के, कृष्ण कन्हैया जग जाना
'इंदु' यशोमति ताक रही पथ, अश्रु विरह के न बहाना
मोहन चित्त मोह लगाना।

मेरे कान्हा सा कृपालु कहाँ किसी जन में।
जिस विधि मैं सेवक सुख पाऊं, वही विचार करे निज मन में
भूख प्यास लगे भोजन तोय, पहनने को दे वस्त्र तन में
ज्यूँ गौ वत्स संग छाया सी, त्यों प्रभु रहे गिरी कानन में
हरि तो उदार चिंता हारी, जग संपदा भरे निर्धन में
भक्त वत्सल हाथ पसार ले, भेंट इस जगत के कण कण में
'इंदु' देर न करे पल की प्रभु, शरणागत के कष्ट हरण में
मेरे कान्हा सा कृपालु कहाँ किसी जन में।

मेरो मन गिरधर छब पर अटक्यो।
ललित चाल टेढ़ी चलि रह्यो, चारू आनन निरख ठठक्यो
नव रंग नव नटवर गुण नागर, नव रूप धरयो नव नवीलो
रस रंजन रस रसाल रसियो, रंग रूप रुपहलो रसीलो
आनंद आय अद्भुत आनन, अंग अंग त्रिभंग अधरीलो
सुंदरसुशील सुभग सांवरो, शुभ सुदेश सौभाग सजीलो
सजल स्याम घन चित्त बरसै, 'इंदु' उर क्यूँ अनंत भटक्यो
जीवन पुष्प कृष्णार्पित हुयो, मोहनी मूरत लख झटक्यो
मेरो मन गिरधर छब पर अटक्यो।

मनोहर श्याम छवि मन बस जावे।
श्याम रंग रंग्यो मेरो तन, पंछी बन बिसरावै
कभी या डाल कभी वा डाल, बैठ कृष्ण गुण गावे
वृंदावन गलियन लोट लोट, कृष्ण चरण रज पावे
काट कलेजो मेरो दे यो, मोहन ज्योत जलावे
श्री माधव की लीला न्यारी, लखुं उत निजर आवे
निहार निहार तोर नैन को, ये नैन सुध न पावे
सांवरा पिया तू दयालु बन, प्रीत प्यारी लगावे
करा 'इंदु' अधर रसपान प्रभु, उर घट भर भर जावे
रसिक श्याम पिय पिला रसामृत, मुरली तान सुनावे
मनोहर श्याम छवि मन बस जावे।

मोहन तिहारे मुख पर न्योछावर जाऊँ।
जिसकी झांकी नैनों से कर, दिन रात आनंद पाऊँ
जब ब्रह्मा जी किये हरण सब, गोप बाल मन दुख लाऊँ
तत्काल बनायो वैसे ही, बालक गण धीर धराऊँ
कार्तिक माय क्रोध कियो इंद्र, भीषण बरसा बरसाऊँ
खेल खेल में कहे गोविंद, गावर्धन आप उठाऊँ
रक्षा कर ब्रज गोप गोपियन, शचिपति को मान घटाऊँ
राखी लाज सभा भीतर में, द्रुपद सुता लाज बचाऊँ
'इंदु' ताप हर त्रिलोक स्वामी, अच्युत तब नाम कहाऊँ
मोहन तिहारे मुख पर न्योछावर जाऊँ।

मैया निरत निरखत नयन नशीलो।
छू पाँव सखी कहूँ दिखादे, गिरधर छम छम छैल छबीलो
नव रंग नवल, नव गुण नागर, नवल नयन नटखट नखरीलो
रसराज रसिक रस भरे नैन, रसमय अधर रसाल रसीलो
सुन्दर सुहावन सुभग श्यामल, शुभ सुशील सौभाग्य शर्मिलो
मन मोहित मृदु मुस्कान मधुर, मनमोहन मेरो मुझे मिलो
तोषित तुषार तृषित तुहिन तट, तरुवर तमाल त्रिभंग तरिलो
इंदु वचन कृष्णदास रूपक, विरह व्याकुल विहग विचारिलो
अरुणित अंबर अनंत अनादि, अव्यक्त अजाय नाथ हठीलो
मैया निरत निरखत नयन नशीलो।

मोरी निंदिया उजाड़ गयो रे श्याम।
कालिंदी तट मैं सोई थी, कंकरी मार गयो रे श्याम
सुख सपने में खोई थी आ, मटकी उतार गयो रे श्याम
घट उतारयो सो उतारयो, माखन चुराय गयो रे श्याम
नटखट नटवर छेड़्यो मोहे, दधी लिपटाय गयो रे श्याम
जमना तट स्नान कर रही थी, कपड़े चुराय गयो रे श्याम
'इंदु' सलोना बंशी वालो, निंदिया सुख दे गयो रे श्याम
मोर चैन लुट्यो परम ब्रह्म, अनंत दिखाय गयो रे श्याम
मोरी निंदिया उजाड़ गयो रे श्याम।

मोहन की मोहक छवि नैनन मध्य रहे।
ज्यूँ उमड़ती नदी वेगि चली, सागर के ओर बिन कहे
लोक लाज सब छाड़ि चली वे, कृष्ण के कर्षण में रहे
मात पितु ने बहुत डपटाया, ना लाज आयी ना डरे
माता पिता की अच्छी बातें, भी तीखी बाण सी लगे
हार मान बैठ गए वे सब, कोई युक्ति काज न करे
श्याम प्रीत में डूब गोपियाँ, लोक भूल प्रीत में बहे
रंग लाती चून सङ्ग हल्दी, कृष्ण मय अनुरागी भये
'इंदु' सर्वस्व कर दे अर्पित, सांवरे को जो मन रहे
मोहन की मोहक छवि नैनन मध्य रहे।

राधा रमन छब अद्भुत मन पावत।
बसंत ऋतु चहुँ दिशि छाई, द्रुम कानन कोकिल गावत
हुलास तन मन जानहिं है सब, सप्तसुर मधुप गुंजावत
मुदित रसिक उमंग मन्मथ सुख, नाथ तुम बिन कौन पावत
बैठे श्याम लाल फूल मध्य, मालती जुही महकावत
मंद समीर मकरंद झकोर, क्रीड़ा ब्रज रमन करावत
कोटिक मनमथ वारे तुझ पर, दृग कानन मोर नचावत
झूलन में फूलन मे वसंत, विदा देत 'इंदु' बतावत
राधा रमन छब अद्भुत मन पावत।

लीलाधारी केशव विश्व विधाता।
क्या जानो वेदना प्रीत की, केशव बस भरमाते हो
कशिश विरह की तुम क्या जानो, छलिये छल छल जाते हो
खेल रचा 'इंदु' मन लुभा क्यों, इतने पास बुलाते हो
जाने न कहाँ छुप जाते हो, क्यूँ इतना तड़पाते हो
चले आओ रसिया तुम बिना, जीवन सूना सा लगता
नींद कहाँ चैन कहाँ अब सब, कुछ छिना छिना सा लगता
दर्शन करा मोहनी सूरत, चैन नहीं मन में आता
नैन मूंद 'इंदु' लखे मन मन, प्रभु सकल ब्रह्म जगदाता
लीलाधारी केशव विश्व विधाता।

लौट आ कन्हैया क्यों और तड़पाये।
ब्रज छोड़ जबसे गए मथुरा, द्रुमदल कानन सब अकुलाए
देखा न कृष्ण धेनु चराते, पशु पक्षी सब ही मुरझाए
सौंदर्य लख सौंदर्य निधि का, तृप्त न होते थे जो नयना
बिन देखे मोहन को मृग भी, भूले अब तो तृण का चरना
जो खग झूम नृत्य करते थे, बंशी धुन बिन भूले उड़ना
कोकिल पिक सब हुए अधीर, अब तो केवल रोते रहना
पल्लव छू कोमल हाथों को, जो जीवनभर रस टपकाये
वे तरुवर शाखा जीर्ण हुई, वियोग में शिथिल हुई जाए
हे सखी सुन त्रस्त 'इंदु' कहे, दशा तन की बहुत घबराए
मदनमोहन बिन एक क्षण भी, अब तो सखी रहा ना जाये
लौट आ कन्हैया क्यों और तड़पाये।

वारिज दृग वारिद वर्ण गल मुक्ता हार।
अलसाये नयना लिए आये, नटखट कृष्ण मुरार
मुख 'इंदु' पर दो खंजन, लाल लाल हो रहे सँवार
अति चंचल मन उड़नों चाहे, ले पलक पंख पसार
घुंघर लट लटकें मुख ऊपर, नयन कटीले कटार
अलकें मदन फन्द खंजन, बंध कर मध्य रख संभार
नासिका शुक पिक वाणी, सुन सुन कपोत करे विचार
रुचिर कपोल चारु कुंडल चाप, भृकुटि करे मनुहार
परम चपल खंजन नयन, छिप छिप प्रकट मानत न हार
सुर नर मुनि देव सृष्टि रचियेता, रूप गावत पुकार
ऐसा रूप देखि गोप गोपिन, दौड़े भूल परिवार
वारिज दृग वारिद वर्ण गल मुक्ता हार।

विरहानल अगन से तप्त कहलाती।
हरि मथुरा गए सुन यह बात, हृदय बहुत तड़पाती
ब्रज नार जले यूँ वियोग में, ज्यूँ दीपक में बाती
विरह में जलने से तो भलो, अगन में कूद जाती
श्याम गए तो हम न बचेंगे, नैनन कुछ न सुहाती
विधुमुख मेरे श्याम सलोने, सखि हम चकोर प्यासी
श्याम के प्रेम में रंग राची, हम चरनन की दासी
नैन नीर ढलक रहे व्याकुल, प्रेम हुई मदमाती
'इंदु' ब्रज नभ हुयो उदास जब, बात श्याम की आती
विरहानल अगन से तप्त कहलाती।

वियोग तड़प तड़प्यो मन गावे।
श्याम रंग में रंग्यो पंक्षी, तन मेरो मन बिसरावे
कभी या डाल कभी वा डाल, बैठ बैठ हरि गुण गावे
लोटम लोट धाम वृंदावन, श्रीकृष्ण चरण रज पावे
काट कलेजों भीतर देख्यो, मोहन की जोत लगावे
माधव की इह लीला न्यारी, जित देख्यो नीजर आवे
निहार निहार नैनन को नित, नैन मोर सुधि नहि पावे
पिय सांवरे तू दयालु बड़ो, निराली प्रीत निहरावे
रसिक पिया रस माधुरी तेरी, रसीली बंसरी बजावे
अधर-रस पान कर 'इंदु' कहे, जीवन घट भर भर जावे
वियोग तड़प तड़प्यो मन गावे।

श्याम संग छाई फागण की उमंग।
फागन आयो रे मतवालों, खेलो होली कान्हा संग
मेरे प्रभु को रंग अनोखो, वाके रस में डूब्यो अंग
निराली छटा देख कान्ह की, शरमा रह्यो आज अनंग
प्यारे कान्हा तेरो ऐसा, करम छाई उमंग तरंग
रुत आयी मतवाली प्यारी, मन झूमे बंसरी धुन संग
तिरछी चितवन को जादू है, रंगे सब कान्हा के रंग
'इंदु' कन्हाई क्या मन आयी, कियो क्यूँ फाग को हुड़दंग
साँवली सूरत सज रही है, नैनन मिल्यो सुख नवरंग
श्याम संग छाई फागण की उमंग।

श्याम दरस बिन मन बुझ्यो बुझ्यो जाय।
मथुरा जावत श्याम सुनी के, ब्रज नार निस्पंद हुई आय
चित्रकार की चित्र चितेरी, जहिं छिति बनी वहिं रह छाय
नैन खुले तो खुले रह गए, जड़वत सी देह गति भुलाय
गुमसुम सी घुलगयी श्याम में, घुलगया जल ज्यूँ दूध माय
विरह वेदना में मतवाली, गज सी हुई रुके न रुकाय
अँखिया संजीवनी सी बनी, मोहन गए देह न सुखाय
जेहि चित्त पर अंकुश लाग्यो, अब तो बैरी हिय झुठलाय
सुरदास की गोपियाँ कदंब, बैठ देखें किस विध आय
श्याम दरस बिन मन बुझ्यो बुझ्यो जाय।

सुन लो केशव मेरी पुकार।
व्याकुल आहत है मन मेरा, कर जोड़ करूँ तुमसे गुहार
दर्द बहुत भरा है जगत में, तू ही लगाए नैया पार
क्यों बने चिरवधिर तुम मोहन, आज विश्व करता आर्तनाद
भव सागर पार लगा नैया, हर ले कान्हा सबके प्रमाद
निष्कपट निरुद्विग्न निष्पाप, अंखिया करे दर्शन की आस
अस्पष्ट, व्यथित मेरी वाणी, जग ले आह भरे उच्छ्वास
चरण रज छुवा दो बंसीधर, नाथ कहे सृष्टि बारंबार
'इंदु' स्नेह प्रेम है चाहता, स्थावर करुण प्रीत दृष्टि सार
सुन लो केशव मेरी पुकार।

सखी क्रूर अक्रूर रह्यो आय।
लाल हुयो वृंदावन सारो, सुन मोहन रह्यो जाय
ग्वाल-गोपियन नैन अश्रु बह, ब्रज सारो बुझ्यो जाय
विरहाग्नि में सखि ऐसी जलूं, बाती बिन तेल जलाय
कान्हा तुझ बिन कैसे गुजरे, हुलास उठे हिया माय
काहे मोह लगायो मोहन, क्यूँ 'इंदु' हियो तड़पाय
नटखट नागर नेह लगायो, सबहुँ छोड़ चल्यो हाय
सखी क्रूर अक्रूर रह्यो आय।

सखी रात सपने में खूब रोई थी।
कभी जागी कभी सोयी थी, किन ख्यालों में खोई थी
उड़ गई निन्दिया उठ बैठी, झपकी लगी तब देखी
नंद महल आगे रथ देखा, दाउ श्याम रथ में देखी
अक्रूर क्रूर से दिखे मुझे, उन्हें ले जाने को अड़े
कहा निमंत्रण कंस राय का, मल्ल आ रहे हैं तगड़े
साथ चलेंगे दोऊ भाई, घूमेंगे दोनों मथुरा
निंद्रा टूटी, टूट दिल गया, सब लागे बिखरा बिखरा
हुक सी मन में उठ रही सखी, कैसे मैं दुख धोई थी
'इंदु' कहे देख देख सपना, ह्रदय अमंगल होई थी
सखी रात सपने में खूब रोई थी।

सपने आय श्याम निंदिया उजाड़ गयो रे।
कालिंदी तट मैं सोई थी, आय कंकरी मार गयो रे
मैं सुख सपने में खोई थी, सपन मटकी उतार गयो रे
घट उतारयो सो उतारयो, उतार माखन चुराय गयो रे
कान्हो नटखट छेड़ो मोहे, मुख माखन लिपटाय गयो रे
दधि घी बिलावान बैठी थी, चुपके मटकी फोड़ गयो रे
नशीली नजर डाली ऐसी, दिल से नाता जोड़ गयो रे
'इंदु' विरह व्यथा ऐसी कही, नित नित छेड़ निहार गयो रे
उर तड़पन उठी ऐसी सखी, कर याद चित्त हर गयो रे
सपने आय श्याम निंदिया उजाड़ गयो रे।

सावन बरसे तो बरसे नैन क्यों नीर रहे बरसाय।
चम चम चमकत चपला अंबर, कब बरसेंगे हरि चित्त आय
छम छम छमकत सावन मयूर, कब मोर मन नाचैगो आय
पिहू पपीहा बोले चातक, मन कब चहके स्वाति जल पाय
कदली कर कर्षण नभ गुंजित, गुम्फित गोविंद प्रीत बुलाय
डोलत अभागन धर दो नांव, प्रीत सिंधु कौन पार लगाय
विरहन जलत पावस अगन मा, चले गए कान्ह कौन बुझाय
कहे 'इंदु' अश्रु मोती माल, भर बिंदु कब पहनोगे आय
आ जा नटखट नटवर नागर, काहे तू दिल रह्यो दुखाय
सावन बरसे तो बरसे नैन क्यों नीर रहे बरसाय।

सीने में छिपा दर्द बाहर कैसे लाऊँ मैं।
काली रात में गगन उड़ता, पाखी घर कैसे लाऊँ मैं
सहमा सा रहता कोने में, घोर डर कैसे भगाऊँ मैं
उठ ताजगी पँखों को दूँ मैं, नई भोर कैसे लाऊँ मैं
सांपों को दूध पिलाया है, गलती दूध की बताऊँ मैं
छलके अश्रु कितने भी घने, आंखों से व्यर्थ बहाऊँ मैं
संभाल श्याम प्यारे आ तुम, इनको इंसान बनाऊँ मैं
'इंदु' दर्द कितना सहे बता, रोऊँ या कि मुस्कराऊँ मैं
सारी दुनिया कहने को है, हकीकत कैसे दिखाऊँ मैं
सीने में छिपा दर्द बाहर कैसे लाऊँ मैं।

सखि री रात सपने छेड्यो श्याम आय।
जा रही थी धर मटकी माथ, माखन छिन मल्यो मुख माय
श्याम बिना कौन करै यह सब, मोह लियो मोहे मुस्काय
गिन मटकी हरि सब लूट लियो, मोहनी लगा चित्त चुराय
देख्यो जब से भूल गयी सुध, तन मोर इत उत गिरो जाय
कौन जादू कीन्हो सांवरो, मंतर फूँक दशा या बनाय
मन सब सखियन को गिरधारी, अपने संग लियो उलझाय
श्याम प्रेम में हुई बावरी, लाज घर द्वारे की भुलाय
टूटयो सपनो दिखे न मोहन, 'इंदु' ढूंढू नैना बढ़ाय
सखि री रात सपने छेड्यो श्याम आय।

सखी कान्ह सपनेहुँ बहुत गरियायो।
माई तोरी शपथ लड़ाकू, या ग्वालन संकोच बिसरायो
इत्ते बालक ब्रज में रहे, मोहे अन्यायी ठहरायो
मुझ पर ही दोष मढ़े अहिरन, काहे तू माइ मुँह लगायो
तू है सीधी सादी मैया, या तो अहीरनी कहलायो
सुनी बातें चतुराई भरी, सपनेहुँ खूब मन हरखायो
'इंदु' ठगी सी जगी नींद सौ, उत्तर कोई ना बन पायो
सखी कान्ह सपनेहुँ बहुत गरियायो।

सखि देख्यो आज एक सपनो।
रात सोयी थी सपने बीच, देख्यो बाल गोपाल अपना
उनींदे से मुरारी भी थे, अंखिया खोले बंद करे वो
मुख चन्द्र पर बैठे ललाई, लिए हुए मानो खंजन दो
कपोल मनोहर चारु कुंडल, तिरछी भवें हैं धनु चाप ज्यों
चपल चंचल नैन खंजन कभी, उठ बैठें हार न मानत जो
घुंघराली अलकावली हैं, मदन फांस खंजन फंसते हों
शुकनासिका वचन पिक देखी, मधुर खंजन चुपचाप रह्यो
गिरधर की लीला देख 'इंदु', सपने मान्यो वाको कहनो
सखि देख्यो आज एक सपनो।

सखि भली नहीं नैनन की संगति।
जिन नैनों में बसते मोहन, उन नैनों की बिगड़ी मति
नैन चुराए नैनों से अब, ढूंढ़े हैं नैनों की गति
बिछुड़े ब्रजराज आज गोकुल, नैनन नैन प्रतीति गयी
रहते थे सदैव श्याम सङ्ग, श्याम छोड़ सब प्रीति गयी
नैन रूप का रसिया कहाय, गोविंद रूप कहाँ पाय
गोविंद तो गए मथुरा जी, नैन यहीं नैन मटकाय
सखि बैरि नैनों का का करूँ, कान्हा की भुलाई प्रीति
'इंदु' नैनों की प्रकृति काली, धोखो दियो याही रीति
सखि भली नहीं नैनन की संगति।

सखि री मन गोविंद संग लागा।
कैसे जिउँ उन को देखे बिन, छिन मन सब अनुरागा
गोकुल को यो श्याम सलोनो, यामे बसै प्राण जानै
कौन न्याय करत हो अक्रूर, जो आय मथुरा लिवानै
अक्रूर पुत्र बड़े बाप के, जन्मे हो ऊंचे कुल मा
बैठ बड़े राजा कंस सभा, प्रीत बड़ है इस धूल मा
ले लो लाग इस ब्रज धरा की, जो भी हो तिहारो अंस
का करिहै गांव के बाल का, नगर वालो बड़ो कंस
सखी बलराम है सबके धन, माधो हैं मोर सब अंग
भेज इन्हें मथुरा कैसे जिउँ, फिर माँगहि काके संग
'इंदु' तन गावत है प्रभु पीर, यशोमति भाग बड़भागा
सखि री मन गोविंद संग लागा।

हर घड़ी आनंद बिरज छायो।
तीन लोक जो नहीं आनंद, तेहि यशोदा घर आयो
बड़ भागन भई गोप नगरी, जन्म जेहिं दिन हरि पायो
अष्ट सिद्धि नव निधि द्वार खड़ी, देव आय चँवर डुलायो
शिव शुकदेव सनकादि ऋषि भी, कान्ह दर्शन दुर्लभ बतायो
यशोदा परम सौभाग्यवती, धन भाग नन्द तू पायो
मोहन 'इंदु' जन्म सफल कियो, आय वेद सत्य बनायो
बिरज धरा रज पुनीत चन्दन, झुक उठा मस्तक लगायो
हर घड़ी आनंद बिरज छायो।

हर्षित तन गोविंद मन बसाए।
माधव गगन की शून्यता सा, गंभीर प्यार मिल जाये
ले सागर की गहराई को, असीम दुलार सब पाये
पृथ्वी की सहनशीलता ले, स्वभाव मेरा बन जाये
तू त्रिगुणातीत ओंकार सा, नवल जीवन संभलाये
ब्रज गोपियों सा निष्काम हो, मधुर भजन अंतस गाये
तेरा नाम ओंकार सा है, भज मन पावन हो जाये
'इंदु' तो जपे अहिर्निश तुम्हें, ब्रह्म ज्ञान तू सिखलाये
रास रचा ज्ञान दिया तूने, तू चित्त शुद्ध करवाये।
हर्षित तन गोविंद मन बसाए।

हरि नारी कल्याण हेतु प्रकट भयो।
नारी ब्रज की तू बड़भागन, परम् ब्रह्म को कान पकड़्यो
अंगना खेलत श्याम बिहारी, हरख हरख संग रास रच्यो
जेहि को देखन शेष महेश, पूजत सो बाल रूप लेख्यो
जाहि मारण आयी पूतना, निज धाम माता कही रख्यो
द्रुपद सुता की लाज बचावन, कृपा हुई और चीर बढ़्यो
दुर्वासा की क्षुदा मिटावन, कुंभ माय साग लाय धर्यो
'इंदु' कहे तू यशुमति प्यारो, देवकी कौन सो पुन कर्यो
तुम्हें उत्थान की बात कही, नारी को सदा मान बढ़्यो
हरि नारी कल्याण हेतु प्रकट भयो।

हे पार ब्रह्म परमेश्वर दूर कर अहंकार।
हे श्री कृष्ण! हे योगीश्रेष्ठ!, सृष्टि ब्रह्माण्ड के सृजन हार
प्रकृति के प्रधान तत्व कारण, आप स्वरूप जग पालन हार
आप नाथ नियंता भगवान, सृष्टि-सृष्टा आप जग स्वामी
अस्तित्व आप में है समग्र, समाहित होता अन्तर्यामी
हे दिव्य प्रभु! प्रवेश हो रचा, विचित्र ब्रह्माण्ड निज धाम में
हे परमात्मा अजन्मा प्राण, चेतन रूप सृष्टि प्रमाण में
कांति 'इंदु' की तेज अग्नि का, प्रकाश भानु का अपरंपार
विद्युत की चपलता आप में, स्थायी चन्द्रिका है नभद्वार
हे पार ब्रह्म परमेश्वर दूर कर अहंकार।

हे गोविंद! हे गोपाल! हे जग तारण हार।
लिख लिख पाती भेजी तूझे, आय जीवन मेरा सँवार
मन स्वच्छ प्रह्लाद सा मेरा, ईर्ष्या होली रही जलाय
श्याम शीतल झोंका वायु का, मन साफ को साफ रह जाय
अहंकार रूप ग्राह जकड़े, अज्ञान रूप ग़ज़ की डार
बेगि आय हरि भव सागर से, करदे मेरा बेड़ा पार
लालसा तृणासुर सी तन की, उड़ा ले जाये गगन पार
'इंदु' देह अर्पण है तुमको, कर चित्त असुर का संहार
हे गोविंद! हे गोपाल! हे जग तारण हार।

हे गोविंद! हे गोपाल! कृपा करो।
है तुम्हारे हवाले जीवन, भव सागर आ पार करो
उड़ उड़ जब लगे सुधा ब्रजरज, हरे मन के सारे पाप
कान्हा की छवि देख निराली, शीतल हो उष्ण संताप
हे श्याम कृपा इतनी करना, मैं सुबह शाम नाम जपूँ
माधव दया बस इतनी रहे, हर समय तुझे याद करूँ
घिरा आज विश्व तूफान में, आ तू ले संभाल जरा
घोर निराशा के बादल हैं, आकर साहस डाल जरा
हर क्षण 'इंदु' संग रहो नाथ, शीघ्र आय उर धैर्य भरो
ब्रजधरा प्रेम की पाठशाला, हृदय प्रेम ही प्रेम भरो
हे गोविंद! हे गोपाल! कृपा करो।

हे सखी दुखी करै नित रजनीकर।
कैसो स्वार्थी गगन बिराजे, कभी न भयो ताप हर
स्वयं तो आंशिक सुख दिखावे, प्रथम निशा बन सुंदर
श्याम बिनु तन मन दहत राखत, रवि हो नयन वारिधर
जलधि उठ वारी व्योम पहुंचे, घन बन भयो व्योमचर
तरनि लगे शीतल मोहे अब, रजनी जनित नहीं जर
सब विपरीत भयो माधव बिन, हित अनहित चाहे कर
सकल विकार कोस कोस कहे, विरहणी तू धीर धर
'इंदु' त्रिलोकी को नाथ श्याम, या कह तू गिरिजावर
हे सखी दुखी करै नित रजनीकर।

हरि बालक सो कैसो खेल रचायो।
प्रीत की बनाय अट्टालिका, क्षिण में उजाड़ी दिखायो
ना हरख्यो रचत ना विषाद, बिगरत हिरदे में आयो
हंस खेल चल दियो राह निज, गोपियन को मन दुखायो
वृंदावन घर एक प्रेम को, बेल संजीवनी लगायो
सींच स्नेह सुधा को जल जिसे, लोक लाज खोद गिरायो
जिन सखिन को इंद्र ब्रह्मा से, आ बल चूर कर बचायो
उन सखियन को छलियो मोहन, तृण सो निकाल हटायो
ऐसो जादू कियो श्याम ने, प्यारो लगे नन्द जायो
हरि बालक सो कैसो खेल रचायो।

हमें प्यारा लागे श्याम बांकुरा।
क्यों बालक सा खेल रचाया, सांवरे गोपियन संग बुरा
भवन रेत का खेले तोड़े, फिर जावे छोड़ खेल अधूरा
तूने भी खेला तोड़ा दिल, फिर बृज छोड़ चल दिए मथुरा
सुंदर सी सजाई वाटिका, लगा प्रीत संजीवनी सुरा
स्नेह सुधा से सींच बढ़ाया, उखाड़ उसे फेंका ज्यूँ मुरा
रक्षा की निज देह की भांति, इंद्र के दर्प का कर चूरा
त्याग चले हरि क्यों अब हमको, लगे हम गोपियाँ तृण धुरा
'इंदु' गोपी कहें सखी सुनो, कदापि लगे न घनश्याम बुरा
हमें प्यारा लागे श्याम बांकुरा।

हरि हरि मन निरंतर सुमिरन करै।
हरि चरणारविन्द मन रखि, हरि छवि निज हृदय धरै
जय विजय उद्धार को हरि, मनुज रूप ले जनमै
धरि वराह रूप कभी प्रभु, दानव संहार करै
नरसिंह रूप तोड़ खम्ब, हिरण्यकश्यप वध करै
रावण कुंभकरण मारण, हरि राम रूप उतरै
शिशुपाल दंतवक्र हुयो, तभी कृष्ण बन प्रकटै
'इंदु' जपत हरि को निशिदिन, कृपालु किरपा सगरै
हरि हरि मन निरंतर सुमिरन करै।

होली ने इस बरस मालामाल कर डाला।
कैसा नशा कैसी कशिश, तनमन हुआ मतवाला
मोहन तेरी होली ने, पिलाई कैसी हाला
ईरिण सा शुष्क मनस्थल, अश्रु ने तर कर डाला
तू जीवन धड़कन दिल की, तू ही मंदिर मधुशाला
श्याम साजन ले बाँह में, प्रेम रंग से रंग डाला
हर रिश्ता हर रंग तूने, पिचकारी से उछाला
तुहि चंदन तुहि वन्दन है, तुहि अंतस में उजाला
होली सा जल जल तूने, है कष्टों से निकाला
'इंदु' स्नेह शान मान है, पीकर हुआ धनवाला
अभ्यर्थना श्याम सखा की, जीवन की पाठशाला
होली ने इस बरस मालामाल कर डाला।

ह्यिो श्याम तन लाग्यो अब तो सुध लीजे।
चंचल चितवन लटकत, मुख अलकावली ना उलीझे
उर चंचल छवि नटखट से, मनमोहन की भर दीजे
बंशी धुन नाच नचावे, जमना तट रास रचावे
टूट गए नाचत घुँघरू, प्रीत मगन श्याम सतावे
जादू करे तिरछी चितवन, निंदिया चुराए बावरो
प्यासी इन अँखियाँ में, अब बस्यो सलोनो सांवरो
सलोनी नवनीत मंडित, देह नैनन बन्द कीजे
'इंदु' मति अति अधम कामी, माधव पावन कर दीजे
ह्यिो श्याम तन लाग्यो अब तो सुध लीजे।

राम भजन

आ बड़ी देर हो रही तारणहार।
बुझे बुझे थे सारे तारे, देखा रात्रि में नभ निहार
क्यूँ जग में अँधियारा छाया, यूँ मन इतना आज उदास
क्यों उदास तारे मुरझाए, क्यों है दोनों गम के पास
बन प्रकाश पुंज आ सांवरे, तिमिर हर जला जीवन ज्योत
मिले शांति शक्ति दुनिया को, टिमटिमा रहा बन खद्योत
'इंदु' विश्व ज्योत जगमगाये, कुछ ऐसा कर प्राणाधार
जगे अलख शांति समृद्धि संग, मुदित पल्लवित हो संसार
आ बड़ी देर हो रही तारणहार।

कृपा करो राम तुम्हारी।
राम शरण पड़ा ये भिखारी, अर्ज सुन लीजिये हमारी
भर दे मेरी झोली दाता, सदा रहूंगा आभारी
काम क्रोध मद लोभ से भरा, अधम कुटिल पापाचारी
अंतःकरण मलिन दया विहीन, मैं हूँ मनुज अहंकारी
रोग शोक ग्रषित बनी काया, सब के सब हाहकारी
ह्रदय सशंकित अत्यधिक व्यथित, कैसी मेरी लाचारी
'इंदु' शीश तेरे चरण धरे, रख वरद हस्त मनुहारी
कृपा करो राम तुम्हारी।

जग में कृपालु अवध बिहारी हैं।
परमेश्वर कौशलेंद्र राघव, मर्यादित सुखकारी हैं
परिपूर्ण नवों गुणों से वे, पुरुषोत्तम कष्ट हारी हैं
अंध जड़ित इस अमा निशा में, ज्योति कलश रघुराई है
आलोकित है अवनी अम्बर, रवि रजनी पर छाया है
श्री राम ज्योतिपर्व दीप से, द्युति द्युलोक प्रच्छाया है
तिमिर की हुई कलुष असितता, विश्व तेज अभिरामा है
जब जानकीनाथ सहाय है, द्युति प्रभुद्ध शशि यामा है
रघुकुल भूषण कौशलेश के, भव्य सदन की बारी है
'इंदु' राम अभिराम जपो तुम, कृपालु अवध बिहारी हैं
जग में कृपालु अवध बिहारी हैं।

दो अक्षर मात पिता हैं मेरे।
कोई करे न करे भरोसा, राम नाम कल्पवृक्ष मेरे
मैं बालक जिद्दी अड़ा पड़ा, पालक स्वामी राम घनेरे
कर्म ज्ञान उपासना सबसे, बढ़कर हैं प्रभु राम चितेरे
सावन के अंधे की भांति ही, हरा दिखे मुझे राम मेरे
राम नाम जपूँ रात दिन मैं, मन में छवि राम की उकेरे
अमिय रस सलिल पान कराओ, राम नाम की माला फेरे
निस्वार्थ परमार्थ चरितार्थ कर, 'इंदु' शरण चरण पड़ा तेरे
प्रीत प्रतीति छाई घनेरी, मन बसा राम सांझ सबेरे
दो अक्षर मात पिता हैं मेरे।

प्राणी पी ले प्याला राम रस का।
मोह माया से मैली किन्ही, तूने देह चदरिया
जिंदगानी पर चढ़ी आयी, कलुष धारे बदरिया
पञ्च तत्व का पहने चोला, है कठिन डगरिया
इक दिन ढह जाएगी तेरी, इस देह की अटरिया
माटी का पुतला ये तन तो, माटी में मिले भइया
रह जाएंगे 'इंदु' यहीं सब, तेरे महल मालिया
साथ करम जाएगा केवल, कुछ ना तेरे बस का
बहुत कर ली कमाई तूने, पी प्याला हरि रस का
छोड़ अहंकार मोह प्राणी, ले नाम श्याम रस का
जी प्रेम रस का, राम रस का, मदनगोपाल रस का
प्राणी पी ले प्याला राम रस का।

ब्याहने जनकपुर आये चारों भाई।
राम लखन भरत और शत्रुघन, इनकी शोभा कही न जाई
नगाड़े शंख दुंदुभि मृदंग, बज रही झांझ अरु शहनाई
उड़ रहा रंग गुलाल अबीर, होरी खेलन सिय सखी आई
उमंग भर भर अनंग छाया, अठखेलियाँ करे मिथिलाई
पुष्प इत्र बरस रहे उन पर, उच्छल शोभित नव तरुणाई
ललित सुगति राजत रघुबीरा, कटि तट कसे तूणीर ताई
गावत नारी सब दे गारी, तात भ्रात कौन बात चलाई
भवन आय मंगल चिन्ह देख, सब सखियां मिल मंगल गाई
अलख अनंत अन्यतम महिमा, मुख अबीर की रही ललाई
सस्मित मुस्कान 'इंदु' देखे, मिथिला सुकुमारी रघुराई
ब्याहने जनकपुर आये चारों भाई।

मातु जानकी प्रभु को मेरी याद दिला देना।
दास मैं पपीहा सा प्यासा, स्वाति सुधा बून्द पिला देना
नाम उन्हीं का ले जीता हूँ, चातक सा फिरूँ कहला देना
मात जानती सरल राम जी, दयानिधि को बतला देना
निज गुण अपराध दास के भूल, जाते प्रभु याद दिला देना
मुझसे गुणहीन को मान दे, प्रभु से प्रेम रस पिला देना
मात जानकी उनसे कहियो, 'इंदु' को मन से अपना लेना
मातु जानकी प्रभु को मेरी याद दिला देना।

मेरे राम सो दूजो कोई न नाम रे।
राम राम राम जप राम रे, जप केवल राम का नाम रे
वैराग्य योग यज्ञ दान तप, कलयुग में आएं न काम रे
गीता कहे कर्म कर ले तू, बना कर्म राम गुणगान रे
इसे साधे रिद्धि सिद्धि सधे, साधो परम धाम सुजान रे
बुरा कर भला कर पार लगे, अंत लिया गर राम नाम रे
पपीहा सा स्वाति बून्द चखो, मोती बन मिलें प्रभु धाम रे
चाँद हैं राम चकोर बन जा, 'इंदु' शरण चरण सब याम रे
श्रीमन्नारायण जाप करो, प्रह्लाद भांति कर प्रणाम रे
मेरे राम सो दूजो कोई न नाम रे।

मैं दीन प्रभु दीनदयाल हैं राम।
ठोकर खाऊँ सुध ना पाऊँ, एक सहारा तेरा नाम
मैं मूरख पापी अभिमानी, राम भक्त वत्सल गुणधाम
नियति के जंजाल में हारा, आनंद धन बरसा सकाम
यह देह शरण आयी जबसे, नैया पार लगाए राम
कष्ट से छुड़ावें राम नाम, जप ले प्यारे प्रभु का नाम
राम नाम धन अनमोल जपो, कभी हो न घटने के काम
अनमोल औषधि सेवो इसे, सुबह जप लो या जपो शाम
श्री राम दूर अज्ञान करें, श्री राम 'इंदु' जीवन धाम
मैं दीन प्रभु दीनदयाल हैं राम।

याद मेरी श्रीराम को दिला देना।
काम मेरा बन जायेगा, मात सिफारिश लगा देना
मैं दीन मलिन साधन हीन, दशा हमारी बता देना
मैं अधम राम नाम रटता, इस पापी को तरा देना
पूछे प्रभु जी परिचय मेरा, आप बस पता बता देना
रामचन्द्र हैं बड़े कृपालु, मेरी बिगड़ी बना देना
'इंदु' कहे जननी जानकी, मुझे राम से मिला देना
याद मेरी श्रीराम को दिला देना।

राम शरण आ जा चरण कमल धरे।
निर्मल श्यामल रूप सलोना, चित्त शांत मन अमल करें
जाकि कृपा की एक नजर ही, भुवन पति बना देती है
सेवक से हम करते गुनाह, क्षमा कर दया देती है
वीरों के शिरोमणि प्रभु राम, नृपों के महाराज है
जानकी पति सा प्यारा नाम, जगत के वो सरताज है
दीन दुखियों के दुःख हर्ता, दुर्बलों के सहारा हैं
शील बन्धु बिगड़ी सुधार दे, राम नाम दृग तारा हैं
गणिका गज गीध अजामिल के, पातकपुंज निर्मल करे
'इंदु' राम नाम नित्य भज ले, मुझ पातक को विमल करे
राम शरण आ जा चरण कमल धरे।

राम जी जैसों न कोई दूजो तारणहार।
शोक निमज्जन सुग्रीव रह्यो, बना कपीश कियो उपकार
निशाचर वंश बेल विभीषण, इंद्र सो यश दीन्हो अपार
तुलसी दास विनायवत कहत, नाम रूप कीन्हो उद्धार
रावण दर्प चूर कियो जानि, भगायो विभीषण लात मार
भक्त के परम स्नेही हो प्रभु, जानु आपके मन को सार
'इंदु' कहे कौन है जगत में, तुझसो दयालु जग उजियार
राम जी जैसों न कोई दूजो तारणहार।

राम जी ही हैं मेरे तारण हार।
राम जी आप ही हो जग के, पोषक तोषक रचना कार
संतों के सब कष्ट उबारे, रावण अहिरावण को मार
भक्त वत्सल शबरी के राम, कृत कृत किया तूने पधार
मानवोचित मर्यादा सीखा, दर्शाया भाई का प्यार
पितु आज्ञा हेतु वन को चले, कर केवट का बेड़ा पार
राम नाम अति सुखदायी है, राम नाम करता उद्धार
शुद्ध मन से जप लो तुम राम, दूर होंगे सारे विकार
कहे 'इंदु' मूरख खल कामी, अवगुणों पर कर ले प्रहार
राम जी ही हैं मेरे तारण हार।

राम जी मैं सुख कैसे मन मेरे लाऊँ।
मैं हूँ दुख की भरी गठरिया, कैसे विचलित मन हरषाऊँ
दिन-रात पिस पाप की चाकी, पुनीत आटो कैसे पाऊँ
पांच इन्द्रियां बनी नचनिया, घर बैठी उधम मचाय रही
नर्तन कराय भोग इन्द्रियां, मुझे निज चाकर बनाय रही
चाबुक मार कोई निकाले, ऐसो गुरु कैसे मैं पाऊँ
काम क्रोध मद लोभ मोह की, मदिरा पी पी मैं भरमाऊँ
तन बैरी इब साथ न देवे, प्रभुजी किस विधि धीर धराऊँ
'इंदु' राम नाम सुमिरत बिना, प्रभुजी मुक्ति कहाँ से पाऊँ
राम जी मैं सुख कैसे मन मेरे लाऊँ।

राम सुगम माँ बाप की नाई।
जेहि नाम दुर्लभ मुनि मन को, तेहि नाम सुगम भक्त ताई
करुणा सागर जो प्रभु मेरो, वो है सनेहि सखा घनेरो
बड़ो रघुनाथ जी हैं सबसे, लोक वेद लिख्यो गुण तेरो
रघुवीर संग प्रीत करै तो, कष्ट न पावै सेवक उनको
राम जी संकोची भक्त के, विचारे दियो क्या भक्तन को
कल्पवृक्ष सो राम नाम है, प्रभु फल भांत भांत को देवत
'इंदु' पड़े जब संकट माही, प्रभु वेगि आय नैया खेवत
का कहूँ राजा राम जी की, अद्भुत है वाकी प्रभुताई
जपूँ राम को नाम दिन राति, राम नाम ही है सुखदाई
राम सुगम माँ बाप की नाई।

राम जी सुफल करेंगे सब काम।
दो दिन खातिर पाई काया, पाप कपट से जोड़ी माया
रह जाये सारी यहीं धरी, क्षण भंगुर संसार बताया
राम नाम भव बन्धन तोड़े, जग सपन सुनहरा अपनाया
अंत काल नजदीक आया, निज पाप देख मन घबड़ाया
छूटे सांस बिखर जाए तन, जैसे टूटे माला मनका
'इंदु' कहे सुन ले रे प्राणी, राम नाम कष्ट हरे तन का
इक राम ही आएंगे काम, मनवा भज ले राम का नाम
राम जी सुफल करेंगे सब काम।

ले चलो साथ रघुपति गुण गाऊँगी।
कृपानिधान सुजान प्राण प्रिय, संग विपिन जाऊँगी
कंटक मार्ग पर चाहे चलूं, पिय संग सुख पाऊँगी।
रघुकुल शिरोमणि थकोगे तो, पद कमल दबाऊँगी
साथ ले चलो स्वामी मेरे, पवन में डुलाऊँगी
नयन चकोर को नित मुख चन्द्र, छवि पान कराऊँगी
छोड़ चले यदि आप नाथ तो, मैं प्राण गवाऊँगी
'इंदु' कहे सिय की पीड़ा यह, त्रिलोक सुख पाऊँगी
ले चलो साथ रघुपति गुण गाऊँगी।

विनती इतनी रामचन्द्र सुखदाई।
अंध विश्वास पाखंड मिटा, हर लीजो मुस्खताई
चाह नहीं सुगति सुमति सम्पति, भारी कौशल और बड़ाई
किरपा कीजो मिले राम पद, बढ़े भक्ति विशुद्ध अधिकाई
बढ़ै अनुराग तोसे दिन दिन, घटै पाप करन सुन रघुराई
रहूं जिस योनि साथ रहे कृपा, सदा चांद सूरज की नाई
जगत मोह देह सङ्ग छूटै, तोर किरपा छूटै न साई
'इंदु' भगति है कूप समाना, यो भरम न कदापि झुठलाई
बजरंग सी मोय भगति मिले, प्रभु बस इतनी सो वर चाई
विनती इतनी रामचन्द्र सुखदाई।

सुमर ले मनवा राम का नाम।
लख चौरासी काट काट कर, दो दिन खातिर पायी काया
मोह लोभ में डूब डूब कर, पाप कपट से जोडी माया
रहे यहीं पाप की कमाई, इस पर क्यूँ तू गूमान करे
सुमर ले मनवा राम नाम, रामजी भव बंधन पार करे
सुन्दर काया देख देख कर, काहे लाड करे तू तन का
छुटे सास बिखर जाये देह, ज्यूँ टूटे माला का मनका
यह पाप जगत लगे सुनहरा, ये तो मेला क्षण दो क्षण का
सुमर ले 'इंदु' राम का नाम, राम नाम कष्ट हरे तन का
सुमर ले मनवा राम का नाम।

सिमरन कर ले रे मनवा नाम राम का।
लालसा कामना से बनी देह, ध्यान करे मात्र काम का
दी बुद्धि ज्ञान दिया नहीं स्वामी, मन खोजे द्वार धाम का
मन वशीभूत खोजता कस्तूरी, मृग की भांति दौड़ वनवन
भव अरण्य में दौड़ कष्ट भोगे, सुख की पराकाष्ठा सु मन
दो दिवस हेतु मिली तुझे काया, पाप कपट की यह माया
रह जायेगी इस अंध कूप में, मन का क्या क्यों भटकाया
बलिष्ठ यह देह देख इतराया, तन छूटे बिखरे मनका
मनका मन का जप ले प्यारे तू, मेला तो यह दो क्षण का
अंत समय की कर प्रतीक्षा 'इंदु', सोचा मद भोग काम का
ये सत्य राम नाम कष्ट हरे, काटे है मोह चाम का
सिमरन कर ले रे मनवा नाम राम का।

हे राम तेरे नाम में ही अपनत्व है।
राम शुद्ध सनातन तत्व हैं, ईश्वर में भी तू कृतित्व हैं
प्रदाता, सर्वाधिष्ठान तू, सूर्य प्रभा दग्ध अस्तित्व है
राम तू प्राणों का प्राण है, अंतर्यामी पूर्ण ब्रह्म है
श्री का ले श्री आनंद परम, राम निस्वार्थ सखा स्वयं है
राम अपरिमेय निरतिशय तू, शक्ति महात्म्य परमेश्वर तू
क्षमा में पूर्ण क्षमा रूप तू, कीर्ति स्तंभ शुभ ज्ञानेश्वर तू
वेदावतार राम जप 'इंदु', रक्षा श्री राम कर्तत्व है
तप्त लौह पिंड सा दहक तू, राघव की शरण अमरत्व है
हे राम तेरे नाम में ही अपनत्व है।

परिचय

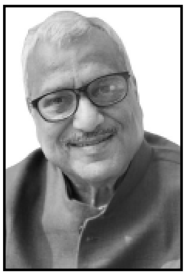

सुरेश चौधरी 'इंदु'

पिता का नाम : स्व. भोलाराम चौधरी
माता का नाम : श्रीमती दुर्गावती चौधरी
जन्म स्थान : जमशेदपुर (वर्तमान में झारखंड)
जन्म तिथि : 14 जुलाई, 1952

शिक्षा : विज्ञान में स्नातक, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, एकोल सुपेरियारे रोबर्ट दी सौबोर्न फ्रांस द्वारा पीएचडी (अर्थ एवं वित्त विश्लेषण) में स्वीकृत मानद; (BSc, FCA, PhD) आरंभिक शिक्षा जमशेदपुर भारतीय मोडल स्कूल कक्षा 7 तक, फिर ADLS हाईस्कूल में मैट्रिक 1963-1967, फिर जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज से विज्ञान में स्नातक (1967-1971)। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स कोलकाता (दास एंड प्रसाद) से चार्टर्ड (1972-1976)।

जीवन वृतांत : 1977-1982, उषा अलॉयस एंड स्टील्स में मैनेजर फाइनेंस के रूप में कार्य। 1982-83 बिहार अलॉइ स्टील्स लिमिटेड में वाइस प्रेसीडेंट कमर्शियल। तत्पश्चात् निजी इस्पात एवं इस्पात से संबंधित कुल 18 कारखाने बड़ोदरा, गोधरा, मेघनगर, जमशेदपुर, चांडिल, बड़बिल, कोलकाता में लगाये। 2008 से 2011 तक आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्य किया।

लेखन में रूचि 2011 से स्वास्थ्य के चलते। सभी कार्य छोड़कर केवल अध्ययन एवं लेखन की ओर झुकाव, तब से नियमित लेखन एवं शोध कार्य। लेखन में विशेष कर-हाइकु, मुक्त छंद, छंद मुक्त, छंद, बाल कविता, आलेख, आध्यात्म, शोध वैदिक सनातन दर्शन एवं आर्थिक विषय पर। भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखों एवं कविताओं का नियमित प्रकाशन, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉग अकेदेमिया, एडु में नियमित लेख प्रकाशन।

'ताजा टीवी' एवं 'दूरदर्शन' पर समय-समय पर चर्चाओं में भागीदारी।

अनुवादित कार्य का विवरण

1.1 श्री दुर्गतिविनाशनी : श्री दुर्गा सप्तशती का भावानुवाद छंद मुक्त लयबद्ध जिसकी विवेचना

महामंडलेश्वर साक्षी जी महाराज एवं प्रसिद्ध साहित्य समीक्षक श्री वीरेन्द्र गोस्वामी, जयपुर ने लिखी। पुस्तक के दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

1.2 प्रांजलि (भाग-2) : श्रीमद्भागवत एवं वेदों के 101 सूक्तों पर आधारित छंद मुक्त प्रार्थनाएँ, समीक्षा डॉ. उम्मेद सिंह बैद, पुस्तक में प्रार्थना के साथ उधृत श्लाकों की संख्या भी दी गयी है।

1.3 वेद से वेदांत तक-मूल पाठ सहित : 9 उपनिषद : ईशोपनिषद्, केन उपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्न उपनिषद, मंडूक उनिपद, मांडूक्य उपनिषद, ऐतरिय उपनिषद, तैतरीय उपनिषद, श्वेताश्वेतर उपनिषद का छंद मुक्त काव्यात्मक अनुवाद, पुरुष सूक्त एवं नासदीय सूक्त का छंदोबद्ध अनुवाद। **समीक्षा :** अंशु त्रिपाठी, प्रसिद्ध कवयित्री, डॉ. अल्पना गोस्वामी, विभागाध्यक्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग।

1.4 आदिशंकर रसमाधुरी :

मूल संस्कृत पाठ के साथ : आदि शंकराचार्य के निम्नलिखित स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद

1. भजगोविंद : चौपाई एवं दोहों में अनुवाद
2. महिषासुर मर्दिनी : कनक मंजरी छंद
3. देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् : हरिगीतिका छंद में
4. निर्वाण षटकम : कुकुम्भ छंद में
5. श्री गंगा स्त्रोत : लावणी छंद में अनुवाद
6. कनकधारा स्त्रोत : मूल छंद में

आशीर्वचन प्रसिद्ध गौ भक्त संत एवं रामजन्मभूमि के प्रमुख आचार्य धर्मेन्द्र द्वारा।

1.5 हर हर महादेव : मूल संस्कृत पाठ के साथ मंत्रों एवं स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद : विषय की विषद व्याख्या स्व-लिखित

1. शिव स्तुति-स्व-रचित संस्कृत में
2. महामृत्युंजय मंत्र : धनाक्षरी में
3. शिव पंचार मंत्र : चतुष्पदी में
4. द्वादश ज्योर्तिलिंग : चतुष्पदी में
5. रावण रचित शिवताण्डवस्तोत्रज़

यह स्त्रोत अनंग शेखर छंद में लिखा गया है, इसे इसी छंद में अनुवाद किया है।

6. श्री शिव महिम्न स्तोत्र : चतुष्पदी एवं लावणी छंद
7. रूद्राष्टक (तुलसीदास रचित) : चतुष्पदी में
8. शिव मानस पूजा स्त्रोत : षष्टपदी में आशीर्वचन आचार्य धर्मेन्द्र जी एवं बालव्यास जी द्वारा

1.6 सुभाषितम : मूल संस्कृत श्लोकों सहित भारतीय नीतिशास्त्र एवं विभिन्न सुभाषित 108-108 श्लोकों की दो माला का दोहों में अनुवाद।

1.7 गोपी गीत : यूँ तो गोपी गीत 19 श्लोकों का एक गीत जो इंदिरा छंद में लिखा गया है, परंतु यह गहन शोध का विषय है एवं प्रत्येक श्लोक अध्यात्म की ऊँचाई की छूता दृष्टिगत है।

इसका अनुवाद भी इंदिरा छंद में ही किया है और विस्तार और विस्तृत भाष्य विभिन्न छंदों में है। यह एक खंड काव्य है।

1.8 सुर तरिंगिणी : देव सरिता माँ गंगा की समस्त कहानी एवं संस्कृत मूल के साथ गंगा लहरी, गंगा स्त्रोत, गंगाष्टकम (कालिदास, आदिशंकर, वाल्मीकि द्वारा रचित) का छंदों में अनुवाद, गंगा का अवतरण हुआ है तो क्या हुआ होगा व्यवहारिक दृष्टिकोण।

1.9 अप्रकाशित : भागवत में वर्णित अनेक गीतों एवं स्तुतियों जैसे, भ्रमर गीत, वेणु गीत, वर्षा गीत, कुन्ती द्वारा स्तुति, गर्भ स्तुति, गज मोक्ष मंत्र आदि का मूल संस्कृत पाठ सहित विभिन्न छंदों में अनुवाद।

विवरण इस प्रकार है :-

क्रम	सूक्त/गीत/स्तुति वेदों से	मूल छंद	अनुवाद का छंद
1.	पुरुष सूक्त	निचृदनुष्टुप	चतुष्पदी
2.	नाशदीय सूक्त	नीचृत्रिष्टुप	चतुष्पदी
3.	हिरण्यगर्भ सूक्त	त्रिषटुप	लावणी
4.	संज्ञान सूक्त	विराननुष्टुप	गीतिका
5.	श्री सूक्त	महा जगति	हरिगीतिका
	भागवत के गीत/स्तुति		
6.	भ्रमर गीत	शार्दूलविक्रीडीत	हरिगीतिका
7.	वर्षा गीत	वसांततालिका	दोहा-चौपाई
8.	यूगल गीत	स्वागता	स्वागता
9.	वेणु गीत	वंशस्थ	हरिगीतिका
10.	प्रणय गीत	उपेन्द्रवज्रा	कुकुम्भ
11.	धुन गीत	वसंततालिका	कुकुम्भ
12.	गजेन्द्र मोक्ष	स्तरगधरा	दोहा-चौपाई
13.	कुंती स्तुति		चतुष्पदी
14.	वसुदेव स्तुति		चतुष्पदी
15.	गर्भ स्तुति		धनाक्षरी
16.	चतुर्शलोकी भागवत		धनाक्षरी
17.	अन्य: कृष्णाष्टकम	पैंचचामर	पैंचचामर

अन्य भाषा से अनुवाद

2.10 अड़सठ शरद रवीन्द्र की शरण : रवीन्द्र के मूल 68 बंगला गीतों को देवनागरी में लिखकर अनुवाद प्रथम अनुवाद है, जो छंदबद्ध है। अभी तक जितने भी अनुवाद हुए हैं, वे सब छंद मुक्त अतुकांत या तुकांत अनुवाद ही हुए हैं। इसकी समीक्षा प.बंगाल के पूर्व राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. राजश्री शुक्ल, प.बंगाल शिक्षण विश्वविद्यालय

की उपकुलपति डॉ. सोमा बंदोपाध्याय एवं पं. सुरेश नीरव ने की है।

अध्यात्म एवं धर्म पर आधारित पुस्तकें

3.11 भारतीय दर्शन : भारत के मुक्त 6 दर्शनों का परिचय। इसमें सनातन धर्म के आस्तिक दर्शनों की प्रारंभिक जानकारी है।

3.12 भारत की अन्य दर्शन : भारत के अन्य दर्शन जिन्हें नास्तिक दर्शन कहा गया है। उनके बारे में प्रारंभिक जानकारी, ये दर्शन जैसे चवार्क, बुद्ध, जैन दर्शन हैं।

3.13 वेदान्त : आदि शंकराचार्य द्वारा चार धामों के चार महावाक्य की विस्तृत चर्चा, जिसकी भूमिका लिखी है दर्शन के महाज्ञानी डॉ. उम्मेद सिंह वैद ने।

3.14 श्रीमद्भागवत महापुराण-परिचय एवं समीक्षा : श्रीमद्भागवत को पंचम वेद भी कहा गया है पर आजकल हर गली-मोहल्ले में हम भागवत के पाठ पर फिल्मी तर्ज के गानों पर लिखे भजनों पर नृत्य देखते हैं। एक व्यवहारिक दृष्टि से भागवत की समीक्षा की गई है, इसमें भागवत कथा के बारे में नहीं बल्कि उसके लिखने के उद्देश्य के बारे में बताया गया है।

3.15 वेदों का परिचय एवं समीक्षा : चार वेद क्या है। इनमें क्या विषय वस्तु है। इनका भाष्य किसने-किसने लिखा है। उन भाष्यों में क्या है। समुचित जानकारी जिसे एक हिन्दू को ही नहीं बल्कि विश्व के हर प्राणी को जानना आवश्यक है।

3.16 मनुस्मृति-परिचय एवं समीक्षा : कालांतर में मनुस्मृति को अभिशाप घोषित कर दिया गया है, जबकि यह हर भारतीय की और भारतीय संस्कृति की रूलबुक है। इसमें जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों के निर्वहन का नियम बताया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रेक्षप मंत्रों एवं शंकाओं का निवारण करने का प्रयत्न किया गया है।

3.17 भ्रम और भ्रांतियाँ : सनातन धर्म में व्याप्त भ्रम जैसे दलित का शोषण 5000 वर्षों से हो रहा है इत्यादि का तथ्यपरक उत्तर, कई भ्रांतियाँ दूर होंगी इसे पढ़ने से।

शोध पुस्तक

3.18 चमत्कृत करती भाषा संस्कृत : संस्कृत कितनी चमत्कारी भाषा है, उसके हर पहलू पर क्रमश: आलेख लिखे थे, उनका संग्रह इस पुस्तक में है।

काव्य

4.19 तिमिर ढलेगा : आशाओं को जागृत करती 101 प्रेरक कविताओं की पुस्तक जिसका तीसरा संस्करण छप कर आ चुका है।

4.20 बुलबुले-सी जिंदगी : 101 छंद मुक्त कविताएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लिखी हुई, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध गीतकार रमेन्द्र मोहन त्रिपाठी एवं प्रसिद्ध लेखक शिखर चंद जैन ने लिखी है, पुस्तक का दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

4.21 कुछ माणिक कुछ मोती : प्रांजल हिन्दी में रचित छंदबद्ध कविताएँ अलग-अलग विषय पर क्रमबद्ध, समीक्षा प्रख्यात गीतकार श्री विष्णु सक्सेना, श्रीमती सरिता शर्मा एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने लिखी हैं, पुस्तक आर्ट पेपर पर बहुरंगी है।

4.22 प्रांजलि : जीवन दर्शन पर आधारित 101 प्रार्थनाएँ, छंद मुक्त, समीक्षा वीरेन्द्र गोस्वामी, सर्वेश अस्थाना एवं भागवताचार्य पं. श्रीकांत शर्मा बालव्यास जी ने लिखी है। पुस्तक के दो संस्करण आ चुके हैं।

बाल गीत

4.23 आसमान को छू लें : जयपुर के कल्याण सिंह शेखावत के संग यह बाल गीत की पुस्तक बहुरंगी बड़ी साइज में बालकों को मोहती बनी है, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध बाल लेखक संजय जायसवाल 'संजय' एवं आकाशवाणी, कोलकाता की उद्घोषिका सविता पोद्दार ने लिखी है।

अन्य काव्य

4.24 हे माँ : कुल देवी शक्ति स्वरूप माँ जीण भवानी को समर्पित पुस्तिका जिसमें संस्कृत स्तुति से आरंभ कर के 18 सनातन छंदों की रचनाएँ लिखी गई है।

4.25 माँ : मेरी जननी को हर वर्ष काव्याभ्ली देता रहा हूँ, उनके देहावसान पर समर्पित पुस्तिका, जिसमें 20 गीत छंद बद्ध एवं छंद मुक्त दोनों है।

4.26 शून्य से शून्य तक : दृश्य बनाते हुए 81 कविताएं जो जीवन के विभिन्न आयामों पर लिखी गई है, ये कविताएं छंद मुक्त ले बद्ध है।

विविध

5.27 मूल्यांकन : भारतीय अर्थव्यवस्था का आंकलन 2019 में इसे स्व. विलास राव जी के सहयोग से लिखा था। भारत अर्थव्यवस्था के हर पहलू पर गहन चिंतन आंकड़ों के साथ एवं सुझाव प्रधानमंत्री कार्यालय भेजे गए, जिसमें कई सुझावों को मंजूरी मिली।

5.28 भारत की आर्थिक स्थिति में क्या उचित (प्रकाशनाधीन) : समय-समय पर भारतीय अर्थव्यवस्था पर लेख लिखता रहा हूँ। नोटबंदी का सुझाव भी देने वाले कुछ लोगों में से मैं भी था। इन लेखों को एकत्रित कर पुस्तक का रूप दिया गया है।

5.29 भारतीय काव्य संहिता : भारत में प्रचलित सभी काव्य विधाओं का विवरण लिखने की विधा कैसे लिखें, किन बातों का ध्यान रखें-छंद, छंद मुक्त, मुक्त छंद, हाइकु, गीतिका, गज़ल इत्यादि।

यात्रा संस्मरण

5.30 ऐक्सडेनल टूर इन हाइबेरनेसन : यात्रा संस्मरण, लेख की अनियोजित यात्रा के 7 माह जिसमें उसने पूरे भारत का भ्रमण किया। उन भ्रमणों का रोचक विवरण ललित निबंध रूप में। पुस्तक निखिल प्रकाशन आगरा से प्रकाशित।

संवत 2081 में प्रकाशित

5.31 : इंदु प्रभा - छंद बद्ध कविताओं का संग्रह जिन्हें विषयानुसार अनुक्रमित किया गया है।

5.32 : मैं जीवन दंड विधान हूं-नवगीत एवं छंद वद्ध गीतों का संग्रह

5.33 : लघु उपनिषद त्रयी (मांडूक्य, ईश, केन उपनिषद का व्यावहारिक अर्थों सहित भाष्य मूल श्लोक के साथ)

5.34 : इंदु पदावली (कृष्ण भक्ति पद) : 92 कृष्ण भक्ति के एवं 21 राम भक्ति के पद। पद जो एक लुप्त होती विधा है, उसे पुनर्जीवित करने का प्रयास।

5.35 : इंदु पदावली (भाग 2) निर्गुण पद : कबीर, रैदास, दादू इत्यादि संतों की परंपरा को बढ़ाते हुए 95 निर्गुण पद।

5.36 : दोहांजलि, निर्गुण सगुण एवं नीति परक 711 दोहों का अनुपम संग्रह जिसमें 51 दोहे मीतू कनोडिया जी के सौजन्य से समाहित किये गए हैं।

कुछ प्रमुख सम्मान :

1. भारत गौरव (इस्पात में अभूतपूर्व कार्य हेतु तत्कालीन इस्पात मंत्री के कर-कमलों से दिल्ली की एक स्वयंसेवी संस्था द्वारा।)
2. केंद्रीय सचिवालय द्वारा राजभाषा गौरव पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी द्वारा।
3. विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि विक्रमशिला हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा।
4. साहित्य शिरोमणि दामोदरदास चतुर्वेदी साहित्य शिखर सम्मान 2021 एवं 2022 (पूर्व में यह सम्मान अटल बिहारी वाजपेयी, पंडित गोपालदास नीरज, उदप्ताप सिंह जी इत्यादि को मिला है।)
5. श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार साहित्य सम्मान, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन पूर्वी सिंहभूम शाखा द्वारा।
6. साहित्य मार्तण्ड सम्मान प्रसिद्ध संस्था बिहार हिंदी सम्मेलनी, पटना द्वारा।
7. हिंदी साहित्य शिरोमणि मानद सम्मान, साहित्य मण्डल श्रीनाथ द्वारा।
8. 'हिंदी सेवा सम्मान' श्रवण संस्था व शोध संस्थान, हरिद्वार द्वारा।
9. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' साहित्य रत्न सम्मान सह नगद राशि प्रख्यात संस्था अभ्युदय द्वारा।
10. मानद पीएचडी वैदिक हिंदी साहित्य में लेगॉस यूनिवर्सिटी की शोध इकाई 'इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनस मैनिज्मन्ट एंड रेसर्च टेक्नोलॉजी' द्वारा।

विशेष उपलब्धि : 1116 दिनों में 1000 भजन लिखकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया जो कि इंटरनेशनल बुक ऑफ रेकॉर्ड्स द्वारा प्रकाशित और प्रमाणित किया गया।

साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधि : अंतर्राष्ट्रीय संस्था रचनाकार (शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन का एक प्रकल्प) के संस्थापक सभापति, संस्था प्रति वर्ष साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु दस व्यक्तियों को सम्मानित करती है एवं नगद राशि भी भेंट करती है।

शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन के संस्थापक न्यासी जो कैंसर पीड़ित असहाय रोगियों के नि:शुल्क चिकित्सा की सुविधा प्रदान करती है।